JAAP LE MANUA

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1ण हरि जप हरि जप और नहीं सुख। 10

2ण नियति के हम तो खिलौने। 11

3ण विछुड़े जब से चैन न पड़ता। 11

4ण दिल को कैसे बता लगायें। 12

5ण हरि भज हरि भज और नहीं धान। 12

6ण मन हरि भज न और कोई तप। 13

7ण दिल बता कैसे लगाये। 13

8ण नयन में तुमको बसा ले। 14

9ण माना अबल सबल तुम साथी। 14

10ण गीत लिखूँ मैं कहो तुम्हारे। 15

11ण हरि हरि जप मन भटक रहा क्यों। 15

12ण तेरी कृपा से चल रहे। 16

13ण प्यार की बाती जला ले। 16

14ण मन भूल भुलैया यह दुनिया। 17

15ण पा रहे दुख भूल तुमको। 17

16ण हरि बिन पार लगे ना नौका। 18

17ण नयनों के आंसू सूखे ना। 18

18ण देख लो आंसू हमारे। 19

19ण द्वार पर बैठे तुम्हारे। 19

20ण क्यों ना मन तू हरि गुन गावे। 20

21ण आंखों में आंसू दर्द लिये। 20

22ण चलने को चल रहा हूँ। 21

23ण याद तुझे कर हरि हम झूमे। 21

24ण हरि हरि हरि हम तुझे बुलावें। 22

25ण आओ मोहन अब तो आओ। 22

26ण नाम जपूँ कुछ भी ना जानू। 23

27ण मन मन्दिर में सदा रहो तुम। 23

28ण प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये। 24

29ण बहाये नीर ना पूछा। 24

30ण ओम जपो मन ओम जपो मन। 25

31ण हरि बोलो मन हरि ही बोलो। 25

32ण हरि जो चाहे वह ही होई। 26

33ण राम राम मैं जपूँ सदा प्रभु। 26

34ण जाये कहाँ पर नैया। 27

35ण हरि सुपना चल रहा है। 27

36ण हरि हरि भजूँ विनय यह तुमसे। 28

37ण हरि को जपेंगे, हरि को रटेंगे। 28

38ण पी को खोजन घर से निकली। 29

39ण हे हरि तुमको भजें। 29

40ण जीवन मेरा हाथ तुम्हारे। 30

41ण सूखे नयना बरसा इनको। 30

42ण राम कहो मन राम कहो मन। 31

43ण मन बैचेन हुआ हरि मेरा। 31

44ण पीड़ा अपनी किसे दिखाये। 32

45ण बनती मिटती है दुनिया। 32

46ण हे ईश कृपा करना हम पर। 33

47ण ब्रह्म हंसता ब्रह्म ही रोता। 33

48ण हरि चरणा मनुआ सुखदाई। 34

49ण कह दो तुझे मनायें कैसे। 34

50ण जगत नियन्ता बालक तेरे। 35

51ण बस जाओ नयनों में मेरे। 35

52ण तुम बिन कोई नहीं रखैया। 36

53ण मन सोंच भाग्य जो मिले वहीं। 36

54ण हरि दास तुम्हारे रूठो ना। 37

55ण चाहूँ देखूँ पार क्षितिज के। 37

56ण हरि बोलो हरि हरि ही बोलो। 38

57ण हरि ओम हरी मन ओम हरी। 38

58ण मन ओम कहो हरि ओम कहो। 3959ण बसो नयन में हरि तुम मेरे। 39

60ण हरि हरि बोलो मन सब छोड़ों। 40

61ण हरि हर तुम हो सबके स्वामी। 40

62ण पुकारे हम तुझे मोहन। 41

63ण हरि ओम कहे या राम कहें। 41

64ण अपनी दया बनाये रखना। 42

65ण पाना और यहां क्या खोना। 42

66ण तुम बिन मेरा हरि दिल तड़े। 43

67ण कितने बीते दिवस न आये। 43

68ण हरि बोलो हरि हरि ही बोलो। 44

69ण जय पराजय है यहाँ पर। 44

70ण दया दृष्टि हरि हम पर रखना। 45

71ण पार लगा दे मेरी नैया। 45

72ण सुख दुख की पटरी पर जीवन। 46

73ण चाहत रहे कुछ भी नहीं। 46

74ण अंखियां नीर बहा खोजे क्या। 47

75ण देख हम आये कहाँ से। 47

76ण जप हरि मनुआ प्रीति बढ़ाले। 48

77ण हरि को भज ले, हरि को गा ले। 48

78ण हरि हरि जप लो अंखियां खोलो। 49

79ण हरि जप हरि जप हरि मिलेगे। 49

80ण हरि जो चाहे वह ही होता। 50

81ण हरि भज हरि भज कर ले तू तप। 50

82ण हरि जप हरि जप और नहीं कुछ। 51

83ण दर्द कितना आंसुओं से। 51

84ण हरि बिन चैन न आये मन में। 52

85ण जो नियति हरि ने लिखी है। 53

86ण हरि जप हरि जप बरसे नयना। 53

87ण ले चलो हरि पास मुझको। 5488ण हरि हरि कहते बहे नयन जल। 54

89ण किससे कहूँ मैं। 55

90ण पार करेगा वह ही नौका। 55

91ण मेरी नैया के खेवट। 56

92ण हरि बिन जियरा यह घबराये। 56

93ण गलत सही कुछ जान न पाये। 57

94ण थक गये हम चलते चलते। 57

95ण हरि हरि जपो न भूलो मनुआ। 58

96ण तुमको हरि मैं कैसे पाऊँ। 58

97ण करूँ मैं अर्चना तेरी। 59

98ण कौन है पागल कौन स्याना। 59

99ण डोल रहा यह पागल मनुआ। 60

100ण आओ तुम कृपा करो प्रभु। 60

101ण तक तक आँखें हार गई यह। 61

102ण मेरे चाहे क्या होये है। 61

103ण कोई सोवे कोई जागे। 62

104ण जब सूख गया निज का ही रस। 62

105ण जीवन में एक सहारा ले। 63

106ण तेरी कृपा बिना ईश्वर। 63

107ण बीते यह पल हरदम तुममें। 64

108ण शरण प्रभु तेरी हम आये। 64

109ण कितना दर्द छिपा है जग में। 65

110ण आंसू गिरते झर झर मेरे। 65

111ण वियवान में तुम कहाँ छिप गये हो। 66

112ण राम मिला दो राम मिला दो। 66

113ण टप टप गिरते आंसू खोजें। 67

114ण तेरी चौखठ पर पड़े हैं। 67

115ण सुन लो प्रभु जी विनती मेरी। 68

116ण हरि हरि जपें मुझे बल देना। 68

117ण **वासनाओं में भरा हरि। 69**

1

हरि जप हरि जप और नहीं सुख, क्या करता पागल मन में दुख। बहती जाती हरि की नदिया, बह ले इसमें मिटते सब दुख। नाच रहे कठपुतली बन कर, सोंच अलग सबकी यह जंगल। नयन बसे हरिकी जब मूरति, जंगल में हो जाता मंगल।

स्वप्निल दुनिया क्या तू पकड़े, कुछ भी तेरे हाथ न आये। धयान लगा देखो यह सागर, बनो लहर जियरा सुख पाये। तेरे पगले हाथ नहीं कुछ, बने लहर फिर खोती जाये। करो समर्पित हरि हाथों में, बह सागर में जिय सुख पाये।

बड़ी लहर कोई है छोटी, कौन पूछता पर वह बहती। देखो सागर रूप हरी का, लहर मिटे तब सागर होती। हरि हरि जपो बहो सागर में, खेल इसके कोई न जाने। मैं को छोड़ो मिटते है दुख, उसकी मर्जी मान दिवाने।

हरि हरि जप, ना और यहाँ कुछ लहर बनी सागर में बह ले। ज्ञान धयान सब ही सागर में, बनी लहर सागर को जी ले। आंसू से जब भीगें अंखियां, भूल नहीं सागर है सैयां। लहर बनी मर्जी सागर की, जानो पार लगे यह नैया।

हरि जप हरि जप हरि ही बोलो, स्वप्निल दुनिया हरि को जी लो। हरि बिन शान्ति मिले ना दिल को, जग में कितनी दौड़ लगा लो। साथ वह सांचा जपो हरि को, मैं को काहे पकड़ नाचता। बतला तेरे हाथ यहाँ कुछ, पवन उड़ावे वहीं पहुँचता।

हरि बोलो वह ज्ञान जगावे, मन के सब सन्ताप मिटावे। सांचा प्रियतम जान यहाँ मन, उलझ उलझ क्यों जग में जावे।
हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, रैन बसेरा जान यहाँ का। किसको पकड़े हाथ न आये, बहता जा सागर यह हरि का।2

नियति के हम तो खिलौने, मन जान ले बैचेन क्यों? वह बहाता बह रहे है, मन तू समझ, हो शान्त यों। नीर तू किसको दिखाये, जपों हरि को शान्ति आये। एक बस वह ही सहारा, लीन हो हरि, सांस जाये।

जपो उसे जपता ही जा, जप कटेंगे सारे संकट। उस बिना ना शान्ति संभव, भूल जा मैं, यही झंझट। जप उसे कटता सहज पथ, दुख बादल जायेंगे छट। ज्योति मन हरि की जला तू, जायेगा अंधियारा छट।

जपो हरि हरि, मन मिटो तुम, झूठ सब, ना सत्य हो तुम। आता पीछे से रेला, ना चलेगी जान लो तुम। आदि वह ही अन्त वह ही, आंख यह क्यों हाय रोई। समर्पित हो मन हरी के, सबका है वह ही सांई।

3

विछुड़े जब से चैन न पड़ता, कैसे जिय समझाऊँ? पड़ा द्वार पर नाथ तुम्हारे, कैसे तुझे रिझाऊँ? अज्ञानी, चलना जानूँ ना, रो रो नीर बहाऊँ। कृपा दृष्टि तुम अपनी रखना, झोली मैं फैलाऊँ।

जीवन बहता नहीं किनारा, दे दो मुझे सहारा। मेरे नयनों में बस जाओ, छूटे दुख संसारा। हरि हरि जपे कटे यह रैना, सुन लो मेरे बयना। अंधियारे में कुछ ना दीखे, गिरूँ नहीं है चैना।

इस जग से कुछ नहीं शिकायत, सबके अपने शिकवे। चरणों मे प्रभु नाथ जगह दो, मदिरा तेरी पीवे। दास तुम्हारा देखो हम को, नहीं ठौर कोई है। जग में भटक भटक मैं हारा, अखियां यह रोई है।4

दिल को कैसे बता लगायें, अंखियां मेरी नीर गिरायें। तुम ना बूझो कौन सुनेगा, पीड़ा किसको यहाँ दिखाये? जीवन एक पहेली माना, सब कुछ लगता है अनजाना। जाते कहाँ, कहाँ से आये, बीत रहा सारा ऊसाना।

मेरे देव ज्ञान हमको दो, अंधियारे में कर प्रकाश दो। अन्तिम पल तक तुही सहारा, अपना प्यार सदा प्रभु तुम दो। हरि हरि जपते कटे रूर यह, मृगतृष्णा में ंसे नहीं मैं। मदिरा तेरी बन मतबाला, मर्जी तेरी वहाँ बहूँ मैं।

दिल से तेरी सुरति न टूटे, बहता जाऊँ सुधा बुधा खो कर। जीवन तेरा मैं तो ना कुछ, क्यों लगता मुझको रि भी डर। नमन करो स्वीकार हमारा, नौका पार लगा मैं हारा। बहते आंसू मैं बह आऊँ, करना मुझसे नहीं किनारा।

5

हरि भज हरि भज और नहीं धान, छूट रहा सब क्यों पकड़े मन? नाच यहाँ जो नचा रहा है, मन तू हरि की कठपुतली बन। हरि बिन नहीं सहारा कोई, टूटे सभी सहारे भटके। हरि हरि जप अन्तस में खो जा, यहाँ सभी में वह ही धाड़के।

अबल है कितना क्यों न समझे, विश्वजीत के सुपने देखे। तनिक वेदना से पीड़ित हो, आंसू बरसे क्यों ना निरखे। सुख दुख धाूप छांव के खेले, सब पल दो पल के ही मेले। हरि की जिसने मदिरा पी ली, सारे दुख वह हँस कर झेले।

हरि हरि भजो न कोई साथी, नित आंसू से भेजो पाती। उसकी मर्जी से ही आये, जायेंगे उसकी ही चलती। प्रेम बढ़ा ले हरि से इतना, बीतेगा सारा यह सुपना। जप हरि करो सदा यह विनती, सदा समझना मुझको अपना।6

मन हरि भज न और कोई तप, शान्ति छिपी है जप में ही सब। जग के शिकवे भूल जपो मन, लाज रखेगा तेरी वह रब। जप मन गीत उसी के गा ले, लहर बना सागर में बह ले। अपना ना कुछ सब कुछ उसका, मनुआ तू यह सत्य समझ ले।

सुख दुख के वह खेल खिलाता, पल में नीर यहाँ बह जाता। कितने बिखरे कांटे जग में, रि भी ूल यहाँ महकाता। हरि हरि जपो उसी को धयाओ, अपने सारे ताप मिटाओ। आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान ना उसे भुलाओ।

मन उड़ उड़ कर कहाँ जा रहा, पाये ना मन भटक रहा तू। मीन घूमती जल में प्यासी, यही अचम्भा देख यहाँ तू। अन्तस में मन धयान लगा ले, जप जप उसको नयन वसा ले। मिट जायेगी सारी पीड़ा, मुरझाया जो सुमन खिला ले।

7

दिल बता कैसे लगाये, पास ना तुम नीर आये। बीत जायेगी उमरिया, दिल नहीं क्यों पिघल पाये। चलते अनजानी गलियां, छाती मस्तिक में बतियां। यादे न दिल से निकलती, पथ देखे रोती अँखियाँ।

नीर आंखों के न सूखें, बनते निर्मोही इतने। स्वप्नों में तू ही दीखे, क्यों हुए हम अबल इतने। प्यार से हमको निहारो, चाहे हमारी जान लो। ना करे शिकवा कभी भी, मेरी परीक्षा खूब लो।

क्या गुनाह हमने किया, चैन मेरा सारा छीना। न पलट कर तूने देखा, काटते कटती न रैना। क्षितिज के उस पार देखो, कौन है मुझको बुलाता? प्यार तो तुमसे सदा था, याद रखना मेरा नाता।8

नयन में तुमको बसा ले, खुशी कदमों में बिछा दें। तुम न मुझसे रूठ जाओ, प्यार की रस्में निभा दे। आँख में झांको जरा तुम, कर रहे तेरी प्रतीक्षा। आये ना संधया ढलती, ले रहे कैसी परीक्षा।

चल रहे दिल में बसे हो, ख्वाब में मेरे रमे हो। कह तुझे कैसे भुलाये, चाह जीवन की तुम्ही हो। प्यार से हमको निहारो, झर रहे वह नीर लख लो। न बनो निर्मोही इतने, कुछ रूर तुम साथ कर लो।

छूटता जाता सभी कुछ, क्यों पकड़ कर यहाँ बैठे? माने न बैचेन यह दिल, तुम भी मुझसे रूठ बैठे। तू बता कैसे मनाये, चाह ना तुमको सतायें। विनती करता प्रभु मैं, ना तुझे पल भर भुलाये।

9

माना अबल सबल तुम साथी, तुमको भेज न पाऊँ पाती। तुम ही ले लो हाथ बढ़ा कर, धाड़क रही है मेरी छाती। धयान तुम्हारा हरपल आवे, देख विवशता जियरा रोवे। मेरी प्रीति न झूठी समझो, आँख मीच तू अब ना सोवे।

वीराने में भटक रहा हूँ, कहाँ छिपी है मेरी मंजिल। बस रो रो मैं तुझे पुकारूँ, पकड़ हाथ ले मेरा साहिल। बहते आंसू बह ना पाऊँ, कैसे इस दिल को समझाऊँ? तुम भी मुझसे रूठ गये हो, बोलो कैसे तुझे मनाऊँ?

झुके हुए हम झोली खाली, चाह नहीं कुछ भी है माली। प्यार तुम्हारा बस मिल जाये, आ जाये जीवन में लाली। सुन पुकार लो तड़े जियरा, प्यार मिले बिन प्यास मिटे ना। तेरी खोज चाह जीवन की, ढल जाये यह शाम कही ना।

10

गीत लिखूँ मैं कहो तुम्हारे, आँसू बहते लख लो प्यारे।
सदा प्यार को रहा तड़ता, तुम बिन जीवन यह ना संवरे।
इस दिल में बस, बसे हुए तुम, पा न सकूँ तुमको है यह
गम। कठिन यह जलता जिय हरपल, निकल जाये न पता
कभी दम।

गीत बनाऊँ प्यारे प्यारे मेरे नयनों के तुम तारे। जनम
जनम का नाता तुमसे, तोड़ चले हम तो हैं हारे। नजर
उठाकर तो तुम देखो, कैसा यह किस्मत का लेखा। पग
पग पर मैं ठोकर खाऊँ, मुझको भूल दिया क्यों धोखा।

नयना मेरे बरसे रिमझिम, आस मिलन की ले ले तरसे।
निर्मोही बन मुझे रूलाते, देखो प्यार सदा था तुमसे। आओ
ना आओ मर्जी है, अंखियां सदा तुझे तरसी है। बस कुछ
ना मर्जी तेरी है, सांस सांस में गूंज तेरी है।

11

हरि हरि जप मन भटक रहा क्यों, नहीं किनारा कोई भी
है। हरि की डोर पकड़ मन बह ले, फिर दुख सारे मिट जाते
हैं। हरि की गंगा में जो नहाये, चैना इस दिल को आये
है। हरि बिन पार लगे ना नौका, समझ काहे दुख पाये है।

मन तू चंचल कटते नहीं पल, कहाँ जाये करे जिय
क्रन्दन। स्वप्निल दुनिया विलखे यह मन, प्रीति बढ़े हरि
हरषे जीवन। तृष्णाओं ने हमको घेरा, तोड़ उसी का मन
तू घेरा। उलझा ना तू इसमें मुझको, मिटती तृष्णा होय
सेवरा।

हरि हरि जपूँ नहीं कुछ चाहूँ, नयना बरसे बहता जाऊँ।

मन हरि से तू प्रीति बढ़ाले, विनय करूँ तुमको समझाऊँ।
हरि की प्रीति बढ़ा मन हरपल, और नहीं तू मुझे सतावे।
हरि की यादें प्यारी लागे, चाहूँ और नहीं उलझावे।

12

तेरी कृपा से चल रहे, ले जाये न जाने कहाँ? वंचित न करना प्यार से, तेरे बिना सूना जहाँ। आँख से है नीर बहते, हरि तुझे हम याद करते। व्यथा हम किसको सुनाये, अनजानी गलियाँ चलते।

नाचता ब्रह्माण्ड सारा, कौन सा लेकर इशारा। नाथ कण कण में बसे तुम, मन यहाँ पर खोज हारा। चरण में तेरे पड़े हम, तुम लाज प्रभु रखना सदा। इस दिल में रहना तुम प्रभु, हरि ना कभी होना जुदा।

अज्ञानी न ज्ञान मुझमें, पांडित्य से रिश्ता नहीं। बस तुझे रो कर पुकारूँ, तुम लो हमारी सुधि मही। धाड़के जिय काली रैना, देखते तुझ ओर नयना। बल नहीं है नाथ मुझमें, देखो इतना ही कहना।

13

प्यार की बाती जला ले, छिपा रस इसमें यहीं। नदिया यह बहती जाती, हाथ तेरे कुछ नहीं। मालूम ना इस राह में, कौन मिल जाये कहीं। पोंछ ले आंसू नयन के, यहाँ ना रहना कहीं।

हरि बोलो सब है सुपना, कुछ नहीं अपना यहाँ। बीत जायेगी यह रैना, कुछ न कर शिकवा यहाँ। गीत हरि गा ले चले जा, प्यार बाटो जगत में। सब इसी की भूख लेकर, फिर रहे हैं जगत में।

जो देखे रोती अँखियां, प्यार दे सब भूल कर। आंख में हरि ही समाया, झुक उसी को नमन कर। क्या करना किससे शिकवा, हरि नचाये नाचता। कर सदा सुमरण उसी का, न भूल, रख हरि वास्ता।14

मन भूल भुलैया यह दुनिया, सब नाच रहे ता ता थैया। कोई ना जाने कहाँ छिपा, अँखियाँ रोती कित गये पिया। मन हरि चरणों में नीर चढ़ा, तू जान सके ना इतना दम। वह ही साहिल ना भूल उसे, हरि को सुमरन कर वह प्रियतम।

हरि भज हरि भजता ही जा, नौका को पार लगायेगा। तू भूल गया इस मेले में, भूलेगा दुख को पायेगा। तेरा रहवर तो हरि ही है, उसकी मर्जी से तू आया। कर ले हरि का विश्वास यहाँ, उससे ही मिलती है छांया।

मन रट ले हरि दिन रात यहाँ, इन सांसो में हरि ही गूंजे। जिसने पी ली उसकी मदिरा, बहते आंसू हरि को पूजे। आनी जानी इस दुनिया में, रक्खा ही क्या सब विछुड़ रहे। हरि का जिसने भी धयान किया, नाचे सागर न लहर रहे।

15

पा रहे दुख भूल तुमको, किस्मत न कर ऐसी यहाँ। जिन्दगी का लक्ष्य क्या है, जाने नहीं जाये कहाँ? प्यार तुम्हारा हरि मिले, दिन रात ही सुमरण करे। बीतें यह काली रातें, सब जख्म इस दिल के भरे।

चरण में तेरे पड़े हम, आंख ना मुझसे चुराना। झरती यह अँखिया मेरी, चाहता मैं प्यार पाना। बसों मेरे इन नयन में, सांस तेरा गीत गाये। ले चलो अनजान गलियाँ, भटक रहे तुमको पायें।

माया तुम्हारी निराली, बिन कृपा लगती न लाली। अश्रु का उपहार ले लो, कुछ न मेरे पास माली। शरण में तेरी पड़ा हूँ, देखता तुझ ओर प्रभु हूँ। कर्म बन्धान कट न पाते, कितना हुआ मैं विवश हूँ।

अज्ञान में रात काली, तुम करो प्रभु जी उजाला। ज्ञान का वरदान दे दो, पीयू मैं तेरी हाला। बल नहीं मुझमें अबल हूँ, मांगता तेरा सहारा। नयन में आंसू छलकते, देख लो मैं नाथ हारा।16

हरि बिना पार लगे ना नौका, ढरक रहे आंसू इस पथ में। अपनी अपनी पीड़ा लेकर, सभी घूमते हैं इस जग में। हरि हरि जपो साथ बस उसका, लय हो जा मन खेला पल का। झर झर अँखियां नीर गिरायें, खिले सुमन हो जा हरि मन का।

दुनिया यह आनी जानी है, प्रीति करे क्यों सब ानी है। यादों में बरसे गंगाजल, बस पुकार वह ही दानी है। इस मेले में यहाँ अकेले, कौन दर्द बांटे मन रोवे? हरि से प्रीति बढ़ा ले मनुआ, सहज राह तेरी कट जावे।

हरि हरि जपो उसी की दुनिया, तू है कौन बना जो मुखिया। शीश चरण धार हरि के रो ले, दुख मिटते सुख पावे जीया। जपो उसी को मन तू हरपल, जान यहाँ सब कुछ है स्वप्निल। सुपना प्यारा सा बन जावे, जपो उसे टते दुख बादल।

17

नयनों के आंसू सूखे ना, हरि पुकारते तुमको हरपल। चरण पूं ना रूठो मोहन, जायेगी संधया यह अब ढल। बोलो क्या गुनाह है मेरा, नाथ नहीं नजरों को ेरो। दिल की पीड़ा किसे सुनायें, सुनो नाथ मैं तुमको टेरो।

हरि तू दूर विरह पर प्यारा, जलूँ इसी में प्रभु मैं सारा। सारे वैभव फीके लागे, हरि लो शरण नाथ मैं हारा। तेरी दुनिया तू ही जाने, कठपुतली हूँ रूला न इतना। तृष्णाओं में फंसू कभी ना, प्रीति बढ़े तुमसे यह कहना।

अपने मन्दिर जगह मुझे दो, बीत जायेंगे सारे यह पल। तुम बिन सूनी दुनिया लगती, कृपा करो मैं नाथ हूँ अबल। दास तुम्हारा ना ठुकराना, अपना प्यार सदा ही देना। इस सांसों के तुम मालिक हो, कभी न भूलें तुमको जपना।

पिव पिव रटूँ रहूँ मैं रटता, तेरे बिन लागे नहीं यह दिल। तुम बिन बोलो किसे कहूँ मैं, यादों में तेरे गुजरें पल। कुछ ना जानूँ मिटूँ तुझी में, बढ़ती प्रीति नहीं कम करना। बहे नीर तेरी यादों में, सोऊँ जागूँ तुझमें बहना।18

देख लो आंसू हमारे, जिय यह तरसता जग मही। पथ दिखा दो नाथ हमको, कुछ सूझता हमको नहीं। प्यार तेरा चाहते हैं, चाहतें ले भटकते हैं। मैं कहाँ जाऊँ बता दो, प्यार को हम तड़पते हैं।

डोलती नौका यहाँ पर, खो गया तू छोड़ पथ पर। नयन से आंसू निकलते, देख लो अब बन न निष्ठुर। जगत मालिक जग पिता तू, मफ कर मेरी खता तू। तुम मुझे अपना बना लो, मैं थका अब लाज रख तू।

आ बसो नयनों में मेरे, गीत तेरे गाये हरदम। दिल नहीं लगता हमारा, तुम बिना घुटता मेरा दम। दास को अपना बना लो, पथ भूला राह दिखा दो। डसती तृष्णाएँ हमको, नाथ अब पीछा छुड़ा दो।

19

द्वार पर बैठे तुम्हारे, गीत निशदिन गाये हम। अब करो ना नाथ देरी, नहीं निकल जाये यह दम। देखो रोती यह अंखियाँ, जाँनू न कैसे हो बतियाँ? मैं मनाऊँ तुझे कैसे, अबल हूँ कर मफ सैयां।

अंधोरा है रात काली, रूठ न तू मुझसे माली। फूल तेरे बाग के हैं, नयन से मिटती न लाली। शीश चरणों में झुका है, तू कहाँ पर छिप गया है। दर्द दिल का न सम्हलता, कुछ कहो तो क्या रजा है?

नाचें कठपुतली तेरी, कर रहे पांडित्य ढेरी। प्यार के दो बैन सुनने, हम पुकारें कर न देरी। बीत जायेगी उमरिया, नाथ ना हमको भगाना। द्वार पर बैठे तुम्हारे, बीत जायेगा जमाना।20

क्यों ना मन तू हरि गुन गावे, पीड़ा अपनी किसे दिखावे? दो दिन का सब खेल यहाँ पर, जप उसको तू हरि को पावे। प्रीति करे क्यों जग से पागल, तैर रहे सुपनों के बादल। हरि से धयान लगा बहता जा, मर्जी उसकी तेरा क्या बल।

हरि हरि बोले आंखें खोलो, प्यासा है मन प्यास बुझा लो। हरि बिन चैन न आवे मन को, सत्य समझ हरि में लय हो लो। बहती जाती जीवन नदिया, छिपा कहाँ ना जाने छलिया। पीड़ा नयनों से जो छलके, चुप हो पड़ जा हरि के पैयां।

प्रीति बढ़ावे किससे पागल, कोई तेरे काम न आवे। स्वारथ का मेला सब सारा, दुख में साथ सभी तज जावे। हरि का धयान करो पागल मन, वह ही नाच रहा उसका बल। नयना बहते याद उसे कर, संधया भी जायेगी यह ढल।

21

आंखों में आंसू दर्द लिये, चलते जाते कुछ पता नहीं। बन सके ना मीत किसी के हम, सुन लो अपना तो दर्द यही। सूनी मंजिल सूनी राहें, न दिशा कोई भी ज्ञात नहीं। चल चल कर हार गये हम तो, क्या दोगे अपना पता नहीं।

लिखता मैं एक कहानी हूँ, आंसू से भीगी सारी है। अपनी पीड़ा को कहें किसे, जब बना हुआ हरजाई है। नयना यह देख थके रस्ता, आयेगा बोलेगा हमसे। तेरी यादें भी प्यारी हैं, चाहें, ना दर्द मिले हमसे।

तूफान यहाँ कितने आये, ले जाये उड़ा कर पवन हमें। दिन में जो याद बसी तेरी, मिट सके नहीं तू समझ हमें। ना मीत बने पर दर्द लिये, चलते जाते मिट जायेंगे। आंसू से अब तो प्यार हुआ, ना तुझे कभी तड़ायेगे।22

चलने को चल रहा हूँ, ना जानता हूँ मन्जिल। ले कर हवायें जायें, गिरता नयन से है जल। इस शून्य से प्रकट सब, सब शून्य में ही खोता। अरमानों को लिये दिल, पल पल में हाय रोता।

जिय तुम बिना न लगता, ना दर्द दिल का मिटता। छिप क्यों गये हो मुझसे, ना नयन जल यह रूकता। कहाँ जाये यह पता न, तुमको ही खोजते हैं। आशा संजो के हारे, मिल पाते क्यों नहीं हैं।

दिल यादें ले मचलता, नयनों से नीर बहता। तड़ाओ इतना न तुम, दिल की चुभन को कहता। कर कर प्रतीक्षा हारे, न आये मेरे द्वारे। एक बार देख लो तुम, दिल कहता तुम हमारे।

23

याद तुझे कर हरि हम झूमे, चाहें नीर चरण को धोवें। दिल यह रोवे कहा न जाये, तुमसे विछुड़े अब क्यों सोवे? तुमको जपते बीते सुपना, अज्ञानी हूँ क्का न होना। बहते आंसू करते पूजा, विधि से वंचित तुम लख लेना।

बहें याद में आंसू मेरे, बस मेरा तो तुही सहारा। चैन दिल को मिले तुम्ही से, बहता जीवन नहीं किनारा। खोया खोया फिरूँ जगत में, निभा प्यार की प्यारी रस्में। कैसे तुमको नाथ रिझाऊँ, जानूँ न मैं गिरा हूँ पथ में।

दानी भीख प्यार की देना, अपना प्यार नहीं कम करना। अज्ञानी पर बालक तेरे, पार नाव मेरी कर देना। सदा कर्म शुभ को बल देना, मेरे नयनों में तुम बसना। शीश झुकाये नाथ खड़े हम, प्रीति बढ़े नित यह वर देना।24

हरि हरि हरि हम तुझे बुलावें, इन नयनों में आंसू आवे। मेरे दिल का दर्द तुही है, करो मफ क्यों हमें रूलावे? सारे जग का तू रखवाला, मुझे पिला दे अपनी हाला। कभी न तेरा सुमरण छूटे, पांव पूं मैं तेरे लाला।

जग में भटका ना सुख पाया, सदा रूलाती मुझको माया। दया तुम्हारी जब मिल जाये, तपते तन को मिलती छाया। दास बना लो मुझको अपना, ना मन्दिर से मुझे हटाना। सदा निहारूँ तेरी मूरति, बीतेगा सारा ऊसाना।

प्यार तुम्हारा हरपल चाहें, कैसे तुमको नाथ मनायें? पूजा की थाली भी खाली, जिय मेरा यह भर भर आये। नमन करो स्वीकार हमारा, मेरा तो बस तुही सहारा। इस जीवन को देने वाले, लाज राखना मैं तो हारा।

25

आओ मोहन अब तो आओ, मुरली की धुन मुझे सुनाओ। जन्मों से मैं भटक रहा हूँ, प्रीति बढ़े नित चाह बढ़ाओ। तुम बिन मन्दिर मेरा सूना, दिल का रोवे कोना कोना। आहट पाने को यह धाड़के, विनय करूँ नयनों में बसना।

जगा विरह उसमें जल जाऊँ, खो जाऊँ ना कुछ चाहूँ मैं। तेरे धयान में बस लय हो कर, नहीं रहूँ पर कुछ ना बस में। प्रीति बढ़ाओ हरि तुम मेरी, फिरूँ भटकता सुन लो मेरी। पांव पूं अब ना विसराओ, युग बीते ना हरि कर देरी।

मुरली बाजे जियरा नाचे, आंखें रिमझिम रिमझिम बरसे। जग वैभव ीके पड़ जाये, ;षि मुनि सब ही तो तरसे। हरि हरि करता जो सुमरन हो, नयनों से झरता जब जल हो। तीन लोक भी ीके पड़ते, नमन करूँ उस रूप तुम्ही हो।26

नाम जपूँ कुछ भी ना जानूँ, ज्ञान नहीं कैसे पहचानूँ? जियरा मेरा भर भर आता, लाज राख ले तुमको मानू। नीर बहायें अंखियां हरदम, कहाँ छिपे तुम मेरे छलिया। विरह तुम्हारा प्यारा लागे, मिटूँ इसी में वर दे सैया।

प्रीति हमारी बढ़ती जाये, सांस सांस तेरे गुन गाये। लय हो जाऊँ गाते गाते, तुम बिन और नहीं कुछ भाये। बहे नयन से हरपल गंगा, बहती रहे रूके ना धाारा। तेरे चरणों तक पहुँचे यह, पथ दर्शा दो मैं तो हारा।

स्वप्निल सी दुनिया यह सारी, खेल खिलावे बना मदारी। नाचे हम कठपुतली तेरी, सुरति तुम्हारी रहे मुरारी। हरि हरि गाऊँ तुझे मनाऊँ, अबल नाथ मैं कैसे पाऊँ? खेवट बन तू पार लगा दे, चरणों में मैं शीश नवाऊँ।

27

मन मन्दिर में सदा रहो तुम, नीर बहाये अंखियां हरदम। दास तुम्हारा अपना लो तुम, शीश झुकाये खड़े यहाँ हम। सारे जग के तुम हो पालक, नाथ तुम्हारा मैं भी बालक। लाज रखना इस मेले में, जियरा मेरा करता धाक धाक।

अंखियां मेरी नीर बहाये, नाथ तुझे कैसे हम पाये? अगम अगोचर पार न तेरा, चल चल कर हम गिर गिर जाये। कृपा दृष्टि प्रभु अपनी रखना, अज्ञानी हूँ रका न होना। प्रीति तुम्हारी बढ़ती जाये, इन सांसों में तुम ही रमना।

सारे जग के तुम रखबाले, अंखियां रोती ओ मतबाले। मुझे भूल ना चरण पड़ू. मैं, पांव पड़े मेरे हैं छाले। हरि हरि जपते बीते जीवन, इस जीवन के तुम ही हो धान। अंखियां नीर बहायें हरपल, पल भर भी ना विछड़ो ले सुन।

प्रीति जगत की छूटी जाये, बतला मन कैसे समझायें? नहीं किनारा दीखे कोई, तुझसे ही हम आस लगाये। बस जाओं मेरे नयनों में, सदा रहो तुम मेरे दिल में। निरखूँ हरपल रूप तुम्हारा, जगत दन्श भूलूँ इस पथ में।28

प्यारा तुम्हारा बढ़ता जाये, हरि तुम मुझको यह वर देना। सारी दुनिया रंग रंगीली, नीर बहाते मेरे नयना। हरि हरि जपूँ पुकारूँ तुमको, इन नयनों में तुम बस जाओ। छूटे जग की सारी तृष्णा, इन सांसों में तुम ही छाओ।

कहूँ बहुत कुछ कहा न जाता, तुम बिन यह जीवन शर्माता। पड़ा द्वार पर तेरे माली, नहीं तोड़ना मुझसे नाता। डोल रहा ना मिले किनारा, बस मेरा तू एक सहारा। कितना लम्बा रफर यहाँ हो, दिल में तू कट जाता सारा।

करूँ अर्चना तेरी हरदम, नीर न सूखे बहते हरपल। बहता रहूँ सदा मैं इसमें, मिले हमें चाहें ना मंजिल। तेरी यादों में खो जाये, मालिक तू ना तुझे भुलाये। गाते गाते गीत तुम्हारे, नहीं रहे हम तू रह जाये।

29

बहाये नीर ना पूछा, बता दो कौन है दूजा? जलन मिटती नहीं दिल की, करूँ मैं अश्रु से पूजा। नजर आता नहीं कुछ भी, अंधोरे में उजाले हो। प्राणों के तुम्ही प्यारे, दुखी उनके सहारे हो।

पुकारेंगे तुझे रोकर, सुनो मर्जी तुम्हारी है। विरह अग्नि में जाऊँ जल, यह अब लगती प्यारी है। सदा बहती रहे गंगा, हरि बस इतना कर देना। करें सुमरन सदा तेरा, ना तुम मुझको ठुकराना।

सदा जपता रहूँ तुमको, कटे रि यह रफर सारा। तुझे कर याद यह अंखियाँ, बहाती ही रहे धाारा। यहाँ मर्जी नहीं चलती, सब मर्जी का मालिक तू। रजा तेरी में राजी हों, यही प्रभु शक्ति देना तू।30

ओम जपो मन ओम जपो मन, ताप हरे वह दुख भंजक है। जल बिन जैसे मछली तड़े, उस बिन तड़े यह जीवन है। उसका जीवन कौन यहाँ मैं, जैसा राखे उसकी मर्जी। नीर चढ़ा उसको नयनों के, नहीं चलेगी तेरी मर्जी।

गाता जा हरि के गुन पागल, ट जाते सब दुख के बादल। सकल सृष्टि करती परिकर्मा, खेल खिलाती माया हरपल। सुख दुख के वह खेल खिलावे, हरि के भगत हरि गुन गावें। आनी जानी इस दुनिया में, हरि हाला पी नहीं अघावे।

हरि का सुमरण शीतल हो मन, और सहारा ना कोई है। उसकी मर्जी आना जाना, कठपुतली तू जान वही है। सागर पर लहरे बन नाचें, छोड़ भरम सागर ही नाचे। सागर ही लहरों का प्यारा, सागर भूल नहीं क्या सोचे?

31

हरि बोलो मन हरि ही बोलो, मन आंखें अपनी तुम खोलो। स्वप्निल दुनिया बना तमाशा, हरि गीतों को गा तुम जी लो। उस बिन चैन न दिल को आवे, तृष्णा से क्यों जिया जलावे। पल दो पल का खेल यहाँ पर, मिलने को वह सागर आवे।

हरि हरि जपो नहीं लागे डर, नयन बहाये आंसू झर झर। हरि से जिसने प्रेम बढ़ाया, चिंता छूटे जायें रि किधार। हरि की यादों में जो जीता, विष को अमी समझ वह पीता। मर्जी उसकी जैसा राखे, बना लहर सागर को जीता।

हरि ही है बस सत्य कहानी, कौन यहाँ तू दुनिया ानी। हरि हरि जपो मिटे भ्रम सारा, जाने वह ही बहती धाारा। मनुआ हरि से प्रेम बढ़ा लो, दिल के सारे दर्द मिटा लो। छट जायेगा सभी अंधोरा, सत्य समझ मन हरि को जी लो।32

हरि जो चाहे वह ही होई, अपने किये न कुछ भी होई। छिपा बीज में वृक्ष यहाँ पर, समझे बीज वृक्ष मैं होई। अपनी अपनी नियति यहाँ पर, नाच रहे कठपुतली बन कर। हरि की मर्जी मिले सहारा, नहीं मिले चाहें रो जी भर।

बढ़े बीज जब पोषण मिलता, मिले नहीं पल में वह झड़ता। स्वप्निल सी यह दुनिया सारी, हरि हरि भज क्यों जग से डरता। जीव धारा पर जीवन लेता, कोई उसका पोषण करता। लाया तू क्या साथ बता दे, बस में क्या कुछ काहे डरता।

हरि हरि कहो उसी की दुनिया, कहाँ छिपा ना जाने छलिया। इसी शून्य में व्यापक वह ही, जान यहाँ वह खेले सैंया। नमन करो हरि के चरणों में, जानो सब अस्तित्व उसी का। शुभ सोंचो सब कर्म करो शुभ, चाहो हरि को वह ही मन का।

खड़े रहो झोली ले दर पर, करो विनय पथ बने सुगम सा। बसो नयन में हरि तुम मेरे, नहीं यहाँ पर कुछ भी तुम सा।

33

राम राम मैं जपूँ सदा प्रभु, तेरा नाम कभी ना विसरे। ठोकर खाता भटक रहा मैं, तुझे पुकारूँ जीवन संवरे। बस जाओं तुम रोम रोम में, सुपनों में भी तुम ही आओ। जग के वैभव ीके लागें, हरि मुझसे ना आंख चुराओ।

दास तुम्हारा सेवक तेरा, अंखियां मेरी झरती झर झर। तेरा नाम जपूँ मैं हरपल, नहीं भुला मुझको वंशीधार। अज्ञानी हूँ तेरा बालक, अन्धाकार में घूंमू कब तक। नाथ ज्ञान की ज्योति जला दो, पहुँचूं मैं प्रभु तुझ चरणों तक।

हरि हरि गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ, जीवन के सब दन्श भुलाऊँ। शक्ति हमें दो हे जगदीश्वर, बहता जल यह तुझे चढ़ाऊँ। जीवन नदिया बही जा रही, नहीं किनारा कोई जाने। प्राण नाथ तुझमें रम जाये, मंजिल वह ही दिल यह माने।34

जाये कहाँ पर नैया, मर्जी तेरी खिवैया। दर पर तेरे खड़े है, ना भूल मुझकों सैया। ना नाम तेरा भूले, दिन रात तुमको जप ले। नयना बहाये आँसू, इस धाारा में बहा ले।

नहीं प्रीति तोड़ना तुम, अज्ञान में हूँ जीता। चाहूँ तेरा सहारा, बन कर अबल मैं रोता। दिल में उबलती पीड़ा, नहीं दीखता किनारा। जाऊँ कहाँ तू मिलता, हरि थाम ले मैं हारा।

आ बाट देखें मिल जा, रिमझिम बरसते नयना। छोटी सी जिन्दगी यह, कटती नहीं यह रैना। करते नमन तुम्हें हैं, सब कुछ यहाँ तुम्हारा। एक बार देख लो तुम, नयनों से बहे धाारा।

35

हरि सुपना चल रहा है, यहाँ कौन तू बता दे। आया कहाँ से पागल, शिकायत सभी मिटा दे। हरि भज मिलेगा चैना, सागर से प्यार कर ले। चहूँ ओर उसका घेरा, बन कर लहर तू बह ले।

किस किस से करे शिकवा, सब स्वार्थ का है मेला। दो पल का साथ होता, सब छूटे तू अकेला। हरि गुन मगन हो गा ले, सुपना यह बीत जाई। हरि ही संभाले सबको, पथ कट सहज यह जाई।

दिल नहीं दुखा किसी का, बहता है दर्द दरिया। हरि के भजन बिना नहीं, यह पार होगी नैया। पाना यहाँ क्या खोना, सुपना सभी है मिटना। हरि से लड़ा ले नयना, डर मिटते मान कहना।

आया उसी की मर्जी, जायेगा काहे रोना। हरि खेला चल रहा है, उसकी रजा में बहना। बहते नयन से आंसू, हरि को न भूल जाना। तम भी तेरा मिटेगा, हरि याद मन से करना।36

हरि हरि भजूँ विनय यह तुमसे, पहुँचूं हरि मैं तेरे द्वारे। अंखियां मेरी नीर गिराती, तुम बिन चैन पड़े ना, हारे। दीनबन्धाु तुम जग के पालक, दिल मेरा करता है धाक धाक। प्यार तुम्हारा हरपल चाहूँ, ज्ञान मिले पहुँचूं चरणों तक।

तृष्णा के बादल मंडराते, तुम बिन भटक रहा जग अन्दर। पार लगा दे नैया खेवट, नीर गिराती अंखियां झर झर। अगम अगोचर पार न तेरा, फिर भी खोजे मन यह मेरा। चलता रहूँ सदा इस पथ पर, कभी तोड़ना ना दिल मेरा।

प्यास मिटे प्यासा चाहे जल, कृपा दृष्टि रखना तुम हरपल। रक्ा कभी ना मुझसे होना, अज्ञानी हूँ नाथ मैं अबल। हरि हरि भज पायें इसमें सुख, याद करें अन्तिम सांसो तक। जल विरह अग्नि में राख उड़े, पहुँचे प्रभु वह तुझ चरणों तक।

37

हरि को जपेंगे, हरि को रटेंगे, तुम्हें छोड़कर, किसको कहेंगे। तुमको पुकारे, मानो न मानो, तुमको हमेंशा, रटते रहेगे। जीवन नैया हाथों में तेरे, प्यार हमें दो मिल जाये छाया। मालिक तुम्ही हो सारे जगत के, जग में भटकूँ हारी है काया। आंखों में आंसू दिल में पीड़ा, अपनी कहानी कहते रहेगे। तू भी सुने न, सुने कौन कह दें, गिर कर चरण में रोते रहेंगे। चल चल के हारा, भटका जग में, मुझको मिला ना कोई किनारा। नैया के खेवट तुमको पुकारूँ, कोई ना मुझको और सहारा। मूरति तेरी नयनों में छाये, दन्श जगत के सभी हम भुलाये। मेरी हो आशा किससे कहना, चाहूँ मेरे जीवन में आये। आंसू बहते रोती है अंखियाँ, देखो हमें जले मेरा जियरा। रूठे मुझसे खता क्या हमारी, पी पी रटूँ चाहूँ प्यार तेरा। मिले प्यार तेरा तुझमें जीना, ले लो नमन अब कुछ रात बाकी। याद तुम्हारी आती है मानो, ीकी यह रैना तुम बिन साकी।38

पी को खोजन घर से निकली, पी न मिले अंखियां यह तरसी। काली रात डरावें मुझको, अंखियां मेरी झर झर बरसी। पी पी रटूँ न जियरा लागे, मिले न पी क्यों भये अभागे? जीवन यह क्यों सांसे लेता, टूट न जायें तुझसे धाागे।

अंखियां मेरी भर भर आवे, पी न मिले जियरा घबरावे। रोम रोम में पीव बसे हैं, कैसे तुमको हम समझावे? आ मिलो तुम मोहि से सजना, तुम बिन जीवन भी क्या जीना? सभी बहारें ीकी लागे, मानो भी तुम मेरा कहना।

झर झर नीर बहायें अंखियां, निर्मोही तुम बनो न छलिया। मेरे प्राण पुकारें तुमको, पाव पड़ू मैं तेरे सैया। रिती प्यासी भई उदासी, अपना प्यार मुझे तू दे जा। जनम जनम से दासी तेरी, अब तो मेरी प्यास बुझा जा।

39

हे हरि तुमको भजें, प्यार सदा बढ़ता रहे। नयना नीर बहते, चरणों को धोते रहे। जाने कुछ भी नहीं, अनजाने मग भटकते। तुमको हम पुकारें, बिन तेरे हैं तड़ते।

प्यार तेरा चाहे, भूल कर दुनिया के गम। न छिपो अब थक चुके, कैसे मिलो, ना दम। कृपा की भूख हमें, चाहते तेरी छाया। तपे धारा पुकारे, बरस जा झुलसे काया।

बस नहीं अपने कुछ, हरि पार यह नाव लगा। देखो बहे आंसू, अन्धोरा उसको भगा। कर्म लेख जानूं न, नाचता कठपुतली बन। हरि विनय मेरी है, तुझे मनाऊँ रात दिन।

बहारें दुनिया में, क्यों बहे आंसू खारे। चरणा पड़े तेरे, ज्ञान दे दो हम हारे। प्रभु विनती यही है, अब है रि कल नहीं है। न गुनाह प्रभु मेरा, चलते तेरी मही है।40

जीवन मेरा हाथ तुम्हारे, सारी दुनिया के रखवाले। इन आंखों से आंसू बहते, कैसे खोजूं ओ मतवाले। अन्तर्यामी नाथ अबल हम, तुम ही हो इस घट के स्वामी। कण कण में है वास तुम्हारा, प्यार तुम्हारा चाहें स्वामी।

बहते आंसू तुझे पुकारे, चाहें तेरे चरण पखारे। ज्ञान धयान सब नाथ तुम्ही हो, कृपा होय तो तुही उबारे। इन सांसों के तुम मालिक हो, हरि हरि भजे न नयना सूखें। सदा नाथ हम तुमको पूजें, विनय करूँ ना होना रूखे।

आज यहाँ कल कहाँ न जाने, स्वप्निल दुनिया जिय भरमावे। एक सहारा हरि तेरा ही, डूबे नैया पार लगावे। हरि हरि जपूँ दन्श सब भूलूँ, नाम तुम्हारा ले कर बह लूँ। कट जायेगी काली रातें, सुख से तेरी हाला पी लूँ।

41

सूखे नयना बरसा इनको, जिय न लगे हरि तड़े तुमको। प्यार तुम्हारा चाहूँ हरपल, बहें नीर धोये चरणों को। यादों में तेरे जिय भटके, हरि हरि जपें सुरति ना छूटे। कुछ ना मांगू चाह यही है, धयान तुम्हारा कभी न टूटे।

सारे जग के तुम रखबाले, इस जीवन को देने वाले। जानू ना मैं कहाँ किनारा, लाज राखना ओ मतबाले। ठगनी माया खेल खिलावे, आंखों में सुपने सतरंगी। कृपा मिले तेरी पथ पाऊँ, दुनिया तेरी रंग बिरंगी।

काली रैना यहाँ डरावे, नाम तुम्हारा ले सुख पावे। इस जीवन के तुम आधाारा, सांस सांस में तू ही आवे। मर्जी तेरी नौका बहती, डूबे मुझको ना ठुकराना। चरण तुम्हारे हरि मैं पड़ता, सदा नयन में मेरे बसना।42

राम कहो मन राम कहो मन, सुन लो मेरी राम। सुख के दाता दुख भंजक हो, सुखदाता है नाम। अंखियां नीर बहाये खोजे, कहाँ छिपे हो राम। तुम बिन जियरा यह घबराये, लाज राख लो राम।

प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये, ढलती जाती शाम। अंखियां बाट निहारे तेरी, शरण तुम्हारी राम। ठोकर खाऊँ तुझे पुकारूँ, थक हारा मैं राम। डूबे नैया तुम्ही बचा दो, मेरे खेवट राम।

स्वप्निल दुनिया कुछ पल बाकी, कैसे रीझो राम। सांस सांस ले नाम तुम्हारा, मालिक हो तुम राम। नयनन आंसू झोली खाली, तुझे बुलाऊँ राम। पैरों में पड़ तुझे कहूँ मैं, मैं अज्ञानी राम।

43

मन बैचेन हुआ हरि मेरा, भीगी अंखियां क्यों ना माने। बन अनाथ हम तुझे पुकारे, पता ठिकाना कुछ ना जाने। चल चल ठोकर खाये जग में, समझाऊँ मन कैसे पथ में। छिपा हुआ तू देखे छलिया, मानो भी पड़ता मैं पग में।

बहते आंसू तुझे पुकारें, झोली खाली राह निहारे। कृपा दृष्टि तुम मुझ पर करना, तर जाऊँगा तू ही तारे। जियरा मेरा करता धाक धाक, सूझे कुछ ना तेरा बालक। प्यार मुझे तुम दे दो अपना, गया हार मैं रस्ता तक तक।

हरि हरि गाते स्वर कटे यह, खबर हमें न कहाँ जायें हम। बहता रहूँ रजा में तेरी, नाचूँ गाऊँ प्यार न हो कम। तेरी दुनिया तू रखवाला, मुझे पिला दे अपनी हाला। पी कर मगन हुआ सब भूलूँ, तुम्ही रहो इस दिल में लाला।44

पीड़ा अपनी किसे दिखाये, सब अपनी पीड़ा को गाये। पागल मन हरि भज चलता जा, जीवन में पथ वही दिखाये। इस मेले में सभी अकेले, खेल यहाँ कुछ पल का खेले। शिकवा किससे करता तू मन, ज्ञान वही सब हँस कर झेले।

धूप छांव का खेल यहाँ पर, स्वप्निल है यह दुनिया सारी। जितना लिपटेगा होवे दुख, सत्य कहूँ जिय होवे भारी। हरि हरि भज जग का रखवाला, सौंप उसी को तू क्यों हारा। बही जा रही जीवन नदिया, बिन मर्जी यह बहे न धाारा।

सागर नाचे यहाँ लहर तू, उसकी मर्जी वहीं रहे तू। अन्तस जोड़ इसी से नाता, यही नाचता नहीं यहाँ तू। हरि हरि जप लो प्रीति बढ़ा लो, टूटेगा फिर दुख से नाता। मैं की होली जल जाती है, मगन होय जो हरि गुन गाता।

बन कठपुतली खेल खेल ले, डोर उसी के हाथ जान ले। जब तक मर्जी खेल खिलावे, सत्य जान ले पीड़ मिटा ले। हरि की मर्जी में खुश रहना, तप है यही न शिकवा करना। जैसी मर्जी नाच नचाये, सदा उसी को जपते रहना।

45

बनती मिटती है दुनिया, कौन तू रोके यहाँ पर? दर्द को दिल में समेटे, झर रही अंखियां है झर झर। बहते रहो बहे ही जा, कुछ हाथ में तेरे नहीं। नाम हरि का तू पकड़ ले, मन शन्ति का सागर वही।

नयन यह आंसू बहाये, प्राण यह पी को पुकारे। जिन्दगी की शाम ढलती, उस बिना ना चैन हारे। जपो हरि को छोड़ मैं को, नाच ले जैसे नचाये। ज्ञान वह अज्ञान वह ही, कर विनय पथ को दिखाये।

जपता ही जा कटे स्वर, जान कोई ना किनारा। प्यार का तू जाम पी ले, इस बिन हर कोई हारा। नयनों में बस जाये हरि, श्वास उसके गीत गाये। मैं नही हरि ही यहाँ पर, कृपा हो तो ज्ञान पाये।46

हे ईश कृपा करना हम पर, अनजान राह पथ है दूभर। चल चल कर गिरे लगे ठोकर, आंसू बहते मेरे झर झर। मैं अबल शक्ति तुमसे आवे, चाहूँ नयनों में बस जावे। मेरी नैया के खेवट तुम, हम तुझे पुकारे ना आवे।

मेरे जीवन के सर्जक तुम, हर सांस गीत तेरा गाये। प्यासा हूँ सदा रहूँ प्यासा, जब तक तुमको हम ना पाये। अंखियों से नीर गिरे झरझर, पथ सदा तुम्हारा ही खोजें। अज्ञानी पर तेरे बालक, यह चाह सदा तुमको पूजे।

अनजान डगर कुछ जानूं ना, तुमको जानूं बस दुख देना। निर्बल हूँ पास नहीं कुछ भी, देता दुख मैं अपना रोना। जपते ही रहे तुझे हरपल, आंसू यह झरे सदा झर झर। पर डोर सुरति की ना टूटे, इतना तो बल देना हरि हर।

47

ब्रह्म हंसता ब्रह्म ही रोता, बना अजूबा कैसा है यह? मत विवाद में पड़ तू पागल, जग अनजान पहेली है यह। हरि को भजता जा चलता जा, नहीं किनारा कोई भी है। जहाँ जाये तेरी वह मंजिल, मत रो यह दुनिया स्वप्निल है।

हरि बिन चैन न आये मन को, नहीं रूके अंखियों की धाारा। जिसने हरि का नाम लिया है, भय से मुक्त हुआ ना हारा। कौन यहाँ मैं कौन यहाँ तू, बीतेंगे सारे ही पल यह। हरि भज बहे न आंसू खारी, खिल जायेगी बगिया फिर यह।

कण कण में है वही समाया, जपो उसे मिल जाती छाया। मिटते ताप जगत के सारे, जिसने भी हरि गुण को गाया। आदि सत्य वह अन्त सत्य है, छोड़ो मैं कर जिया ना भारी। हरि हरि जप लो नयन बसा लो, मिट जायेगी पीड़ा सारी।

48

हरि चरणा मनुआ सुखदाई, हरि बिन चैन कभी ना आई। चार दिनों का मेला जग में, भज लो हरि मन दुख ना पाई। कितना नाचो स्वप्निल दुनिया, हरि बिन जिवड़ा ना सुख पाई। जीवन नदिया बहती जाती, कोई कूल पकड़ ना आई।

हरि हरि भजो ज्ञान वह देगा, दुख सारे मन के हर लेगा। जो भी उसके हुआ समर्पित, हरि ही सुधिा उसकी फिर लेगा। जप मन जप मन जपता ही जा, बहे नीर हरि को देता जा। कुछ भी तेरे हाथ नहीं है, जानो हरि चरणों में गिर जा।

किंचित चोट रूलाती तुझको, अकड़ यहाँ क्या पीवे दुख को। हरि हरि जप आनन्द वही है, ले जायेगी धाारा तुमको। हरि हरि भजो नाम है सांचा, जल में रह कर तू क्यों प्यासा। पी ले जाम उसी का पागल, दुखहर्ता वह ही है आसा।

हरि हरि भज सुर उसके बजते, मैं को छोड़ धान्य जो रमते। नाच जान कठपुतली उसकी, सुरति सदा ही हिय में रखते।

49

कह दो तुझे मनायें कैसे, अज्ञानी हम पायें कैसे? सकल सृष्टि के स्वामी हो तुम, कृपा करो ना रूठो हमसे। जीवन तेरा दास तुम्हारा, चल चल कर में जग में हारा। कृपा तुम्हारी हरि मिल जाये, डूबे नाव न, होती पारा।

सांस जपे हरि हरपल तुमको, नयना बहें न भूले तुमको। बस जाओं हरि रोम रोम में, माया ठगे बचा ले हमको। तेरी दुनिया रंग रंगीली, कूके कोयल सावन नाचे। तेरे बिन यह अंखियां बरसे, दया करो चरणों तक पहुँचे।

हरि हरि करते बीते जीवन, तुम ही हो इस जीवन के धान। तृष्णा के बादल छट जाये, बसो नयन में तुम सुख नन्दन। गीत तुम्हारे गाऊँ हरपल, बढ़े विरह पाऊँ कन्हैया। पार लगा दो मेरी नैया, संसा नहीं अब मुझे खिवैया।

50

जगत नियन्ता बालक तेरे, सुन लो मेरी राम। ढलती जाती जीवन संधया, प्यार हमें दो राम। जग वैभव ीके पड़ जाते, तेरे बिन हे राम। अपना दास बना लो मुझको, सेवक तेरा राम।

ठगनी माया नाच नचावे, तुम बिन रोयें राम। जिसके दिल में तुम बस जाओ, बरसे मेघा राम। प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये, प्यारे मेरे राम। नयनों से जो मोती बरसे, तुझे चढ़ावे राम।

अज्ञानी हूँ प्यार तुझी से, कम ना होवे राम। पार लगा दे मेरी नैया, बन खेवट ओ राम। नयन बसा लूँ, नाचूँ गाऊँ, सब भूलूँ हे राम। तेरी दुनिया तू ही खेवट, माफ मुझे कर राम।

51

बस जाओ नयनों में मेरे, दूर हो सके तम जो घेरे। मिले कृपा जीवन लहराये, प्राण पुकारे पी तुम मेरे। तेरी दुनिया तू रखबाला, मुझे पिला दे अपनी हाला। मदिरा तेरी हरि मैं पीकर, भूलूँ सब पीड़ा मैं लाला।

हरि हरि गायें तुझें मनाये, पता नहीं सांसे कब जाये? तुम बिन चैन न आवे पल भर, अंखियां मेरी नीर गिराये। सकल सृष्टि के तुम हो स्वामी, छतिया मेरी करती धाक धाक। अबल नाथ मैं हूँ अज्ञानी, कैसे पहुँचूंगा चरणों तक।

दीनबन्धाु तुम दुख के हर्ता, खोजूँ पता न मिलता रस्ता। इन नयनों में आँसू आये, देखे रस्ता बता क्या खता। बीतेगी शाम कभी पर, दर्द न मिलने का कम करना। जल जाऊँ मैं इसी अग्नि में, इतना प्यार मुझे तो देना।

52

तुम बिन कोई नहीं रखैया, इन आंखों से आंसू गिरते। नैया मेरी पार लगाना, मेरे खेवट विनती करते। लाज राखना इस मेले में, अगम अगोचर पार न तेरा। प्यार सदा तुम अपना देना, मनुआ माने तू है मेरा।

ठगनी माया खेल खिलावे, तुझे भूल हम दुख को पावे। प्रीतम तोड़ न प्रीति हमारी, तेरी यादों में सुख पावे। पी पी प्राण पुकारें हरपल, नयना मेरे बरसे रिमझिम। इस गंगा में मैं बह जाऊँ, चाह यही ले चल तू हमदम।

अपनी दया बनाये रखना, बढ़े प्रीति मुझको वर देना। इस जीवन की तुम हो आशा, सदा निहारें पथ यह नयना। नहीं किनारा नैया डोले, ले चल मुझको होले होले। बस जाओं तुम इन नयनों में, तूफानों में जिया न डोले।

53

मन सोंच भाग्य जो मिले वहीं, उपजे मन में बस सोंच वही। हरि खेल रहा इस जग में है, मैं हटा जान तू यहाँ नहीं। बैचेन हुआ यह मन डोले, हरि भूले यह अंखियां भीगे। जप ले मन हरि है सत्य सदा, उसके हाथों में ही धागे।

तू नाच यहाँ कठपुतली बन, मैं छोड़ हरी का प्यारा बन। जपता जा भूल नहीं उसको, बरसे अंखियां जैसे सावन। मर्जी उसकी ही आये हम, जायेंगे जब ना पूछेगा। मेहमां यहाँ दो पल के हम, बिन हरि के मनुआ भटकेगा।

सुखदाता शान्ति मिले उससे, जब जंगल में जियरा भटके। अंधियारी काली रातों में, जप उसको जियरा हरि महके। मन सुरति लगा हरि की बह ले, न कोई किनारा जाने है। नदिया यह ही ले जायेगी, जो बने हरी दीवाने है।54

हरि दास तुम्हारे रूठो ना, दे दो मुझको अपनी छाया। तपती धारती खाता ठोकर, झुलसाती है तेरी माया। तेरे बालक हम अबल नाथ, कैसे तुमको हरि हम पायें। अनजान डगर रोती आंखें, सम्बल दे चला नहीं जाये।

इन प्राणों के तुम मालिक हो, पी रटें नजर तू ना आवे। अंखियों की बहती धारा में, कैसे बतला हम समझावे? धारा भी तेरी प्यारी है, चाहूँ इसमें बहता जाऊँ। बस जाओं मेरे नयनों में, दे प्यार तुझे ही अपनाऊँ।

बीते यह शाम तुझे जपते, कुछ समझ नहीं जो कुछ कहते। अपनी तुम दया सदा रखना, देखो मेरे नयना बहते। हरि तेरी मैं मदिरा पी कर, सारे भूलूँ दुनिया के गम। अपना हरि दास बना लो तुम, नयना मेरे बरसे रिमिझम।

55

चाहूँ देखूँ पार क्षितिज के, छिप गये क्यों कृष्ण कन्हैया। अंखियां मेरी भर भर आवे, चरण पडू. तेरे मैं सैया। प्यार तुम्हारा हरपल चाहूँ, यही चाह बस तुझे मनाऊँ। जीवन दाता मेरे सर्जक, कृपा मिले तो ही पथ पाऊँ।

दीन बन्धु तुम सुख के दाता, चैन मुझे तुम बिन ना आता। मेरे इस दिल में बस जाओ, तुम ही मेरे भाग्य विधाता। कृपा दृष्टि तुम अपनी रखना, देखों मेरे बहते नयना। कुछ भी मेरे पास नहीं है, बस देता हूँ अपना रोना।

हरि हरि गायें तुझे मनाये, स्वप्निल रूर यहाँ कट जाये। इन नयनों से बहता पानी, चाहे प्यार सदा हम पाये। आदि अन्त तुम सदा सत्य हो, सुमरे तुझे न रोवे काया। लाज राखना हरि तुम मेरी, सदा राखना अपनी छाया।56

हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, कुछ पल बाकी आंखे खोलो। बीती बातें भुला सभी अब, वर्तमान में हरि को जी लो। कितने दन्श लगे मन रोया, हरि को भूल यहाँ क्यों सोया। जप ले शान्ति सुधा वर्षाता, मनुआ किन सुपनो में खोया।

जप ले प्यारा नाम उसी का, मिटते भय पी जाम उसी का। सोच सोंच चिन्ता में ंसता, तम हर्ता ले नाम पिया का। करो अर्चना सदा हरी की, उसकी नदिया में ही बहते। अपना क्या सब यहाँ नदी का, बन कर लहर धान्य जो बहते।

सूखे ना आंसू की धारा, बहे नीर वह उसे चढ़ा दे। प्रेम बढ़े नित यही मांग ले, दया मिले तो ही वह पथ दे। सदा हरी गुन गा मन पागल, सुपना सा सब बीत गया कल। जप हरि को मन चैना आवे, सुख से जायेगी संधया ढल।

57

हरि ओम हरी मन ओम हरी, नयनों में काहे नीर भरी। सारे जग का वह पालक है, उसको पुकार वह ताप हरी। उसका दिल में जब बोधा जगे, दिन रात निरन्तर जिया जपे। वैभव सारे ीके लागे, मन तड़े ढूंढे कहाँ छिपे।

मन को लागे वह ही प्यारा, सारी दुनिया से वह न्यारा। न रूप कोई सब रूप वही, नयनों से बहती है धाारा। मन और यहाँ क्या पाना है, जपते जाओ उसको हरदम। कठपुतली हम वह ही मालिक, बरसे अंखियां देखो रिमझिम।

मन सोंच सोंच ना हो पागल, कर प्यार उसी से वह साहिल। मर्जी उसकी ही चले यहाँ, मन उसे समर्पित हो पागल। जप होम हरी वह जगत मही, दिल को उदास क्यों करता है। मर्जी उसकी जैसा राखे, वह धान्य नयन हरि बसता है।

कुछ बीत गई कुछ बीतेगी, स्वप्निल सारी है यह दुनिया। दिल में जब दीप जले हरि का, छटता तम नाचे यही जिया। हरि ओम कहो हरि को जी लो, अमृत की बूंदो को चख लो। दिल में ना चुभन रहे कोई, उस प्यारे की हाला पी लो।

58

मन ओम कहो हरि ओम कहो, तड़न मिटती हरि ओम कहो। तपते दिल को दे शीतलता, जपता ही जा मन ओम कहो। स्वारथ का मेल यहाँ सारा, आंसू बहता हरपल खारा। हरि बसे नयन हरि धुन गूंजे, सब ही रि हो जाता प्यारा।

अंधियारी रातों का साथी, मन उसे भुला अंखियां रोती। सब साथ यहाँ जब छोड़ चले, पर उसकी जलती है बाती। जपता जा नहीं भुला उसको, रखबाला वह देखे सबको। स्वप्निल यह सारी दुनिया है, अब है कल दीखे ना हमको।

जग के जब दर्द सताये मन, जप उस बिन चैन न आये मन। प्रीतम वह ही प्यारा लागे, अंखियां बरसे भादों सावन। सबका सर्जक पालक वह ही, कर याद उसे संताप हरो। जग की पीड़ा सब मिट जाती, ना उसे सुरति से दूर करो।

59

बसो नयन में हरि तुम मेरे, जीवन के सब दन्श मिटा दो। खड़े द्वार पर हाथ जोड़ कर, अपना प्यार हमें प्रभु तुम दो। अन्तर्यामी जग के पालक, तेरे इंगित पर जग चलता। ;षि मुनि ज्ञानी पूजा करते, अज्ञानी मैं तो बस रोता।

ज्ञान धयान सबके मालिक तुम, करो कृपा कर दो उजियारा। प्यार तुम्हारा चाहूँ हरदम, किस्ती पार लगा दो हारा। दीनबन्धु तुम दुख के हर्ता, सोये स्वर को तुही जगाये। साज बजाना मुझे न आये, इन नयनों में आंसू आये।

देखें राह थकी यह अंखियां, पांव पड़ू. तेरे मैं सैंया। जीवन यह क्यों सांसे लेता, तुम ही रूठ गये जब सैया। सुख दुख जीवन नदिया बहती, कर्मों की जंजीरे बजती। पड़ा भंवर में तुझे पुकारूँ, सुनो नाथ तुम मेरी विनती।

नयन बसो हरि जुदा न होना, दीखे नहीं किनारा कोई।
धयान तुम्हारा बढ़ता जाये, डर न लगे जिय निर्भय होई।
हरि हरि जप गायें तेरे गुन, गूंजे सदा कान में यह धुन।
प्रीति निरन्तर बढ़ती जाये, नाथ हमारी विनती लो सुन।

हरि हरि बोलो मन सब छोड़ो, बहती जाती जीवन नदिया। ना रूके सभी से प्रेम करे, फिर भी रोती हैं यह अंखियां। हरि जप हरि जप मन चैन मिले, स्वप्निल सारा संसार लगे। पाना क्या और यहाँ खोना, हरि बिन लगता हम गये ठगे।

अपनी अपनी है डगर यहाँ, स्वारथ अपना सब ही सोंचे। सब दिखा विवशता अपनी वह, अपना रोना ले सब नाचे। ना आंख उठा देखा उसने, मतलब क्या उसको हम तड़े। आंखों से नीर बहें मेरे, मिलने को हम उनसे तड़े।

दो कदम साथ में सुख पाते, जब कभी विछुड़ते दुख पाते। इस द्वन्द भरी दुनिया में मन, जप ले हरि को सोते जगते। हरि प्रीति करो रखबाला वह, नैया को पार लगायेगा। जलते दिल की मन तपस मिटे, वह शान्ति सुधाा वर्षायेगा।

हरि जप हरि जप मन प्यार बढ़ा, शाश्वत वह ही ना जिया जला। आती सांसें कब छोड़ चले, इन प्राणों को मन अमी पिला। तू अबल यहाँ हरि की लीला, तू कौन यहाँ करता क्रीड़ा? बस तेरे होता यदि कुछ भी, ना वरण कभी करता पीड़ा।

हरि हरि जप शान्ति मिले उससे, ;षि मुनि सारे उसको तरसे। तम दूर करे पथ दर्शाये, नित प्रेम बढ़े जियरा हरषे। हरि नयन बसे सब मिटे फिकर, कर्ता हर्ता ले जाये किधार। मन हुआ समर्पित तू बह ले, सागर में बस तू एक लहर।

61

हरि हर तुम हो सब के स्वामी, दर्द दिखाऊँ तुमको अपना। मेरे नयन बहाये पानी, कृपा करो मिल जाये चैना। अगम अगोचर पार न तेरा, जग में भटक रहा मन मेरा। छलिया बन कर मुझे रूलावे, दूर करो तम होय सुबेरा।

हरि हर तुम हो अन्तर्यामी, बालक तेरे हम अज्ञानी। बाट निहारें तेरी हरपल, शरण राख लो मुझको अपनी। खिले नाथ तेरी बगिया में, छोड़ कहाँ पर जाये तुमको। झर झर मेरे नीर बह रहे, करूँ विनय तुम देखो इनको।सांस सांस में तुझे जपें हम, सदा रहो नयनों में हरि हर। सभी दर्द नयनों से बह कर, चरण तुम्हारे धोाये हरि हर।

62

पुकारे हम तुझे मोहन, तुही मेरा सहारा है। बहाती आंख यह पानी, तुही दुख का विनाशक है। दया अपनी सदा रखना, नहीं आंखें चुराना तुम। सांसों में तुम्ही महको, कभी भी प्यार ना हो कम।

गिरूँ थक थाम तुम लेना, सूखे ना मेरे नयना। जले दिल याद में तेरी, बिन तेरे भी क्या जीना। छिपे हो तुम कहाँ मोहन, रचाओ रास कुछ पल को। तुझे मैं देख लूँ जी भर, देखो संधया ढलती को।

तुम्ही सर्जक तुम पालक, तुम्हारे नाथ हम बालक। अंखियां रोती है देखो, जिया करता मेरा धाक धाक। चरण में हम पड़े तेरे, लगाना पार किस्ती को। सुरति तुम में रहे हरदम, वर यह देना तुम हमको।

63

हरि ओम कहे या राम कहें, बोलो हरि हर क्या तुझे कहें। कैसे रीझो कुछ ना जाने, अज्ञानी है तुझ कृपा चहें। आ जाओं इतना नहीं रूला, तुम दीन बन्धाु दुख के हर्ता। ढलती जाती जीवन संधया, अंखियां देखे तेरा रस्ता।

दुख का दरिया जग में बहता, जप तुझे चैन यह दिल लेता। सुख दुख की आंख मिचौनी यह, मैं चरण तुम्हारे हूँ पड़ता। हरि प्रीति बढ़े हरपल तेरी, यादों में नयना सदा बहें। पल भर भी तुझे न विसराऊँ, मर्जी तेरी कुछ नहीं कहें।

हरि बल मुझको इतना देना, ना हटे कभी तुझसे नयना। स्वप्निल यह सारी दुनिया है, चाहूँ हरपल तुझमें बहना। जग के वैभव मैं माँगू क्या, पीड़ा मैं किसकी दूर करूँ। पीड़ित मैं चाहूँ बस इतना, पीड़ा हर सबकी विनय करूँ।64

अपनी दया बनाये रखना, तुम बिन कृपा सदा सब हारे। अबल नाथ मैं सबल तुम्ही हो, बल दो पहुँचूँ तेरे द्वारे। ठगनी माया नाच नचावे, कभी हंसावे कभी रूलावे। अंखियां नीर बहाये झर झर, देखे रस्ता तू कब आवे।

पाप पुण्य कर्मों की रेखा, द्वन्द लिये पागल मन रोता। अज्ञानी हूँ पथ दर्शा दो, नीर नयन से मेरे बहता। अपने हाथों नहीं यहाँ कुछ, बन सागर में लहर न बहता। तेरी लीला नाथ निराली, छोड़ तुम्हारी मदिरा रोता।

जीवन नदिया वही जा रही, कठपुतली बन कर हम नाचे। हरि की मर्जी आना जाना, मैं को हटा सोंच क्या सोंचे? हरि हरि जप शुभ सोंच जगाये, मारग दुस्तर पथ दर्शाये। जिसके दिल में वास हरी का, लगे नहीं डर बहता जाये।

65

पाना और यहां क्या खोना, पल दो पल का यह सब मेला। हरि से मन तू प्रीति बढ़ा ले, मिट जाये सब दिल का मैला। सत्य देख ले आज यहाँ जो, कल मिटती सब वही लकीरें। प्रीति करें क्यों क्षण भंगुर से, प्रीति कर हरि, काहे विसारे।

आदि अन्त वह सदा सत्य है, सब द्वन्दो के पार वही है। जग को देख देख भरमाता, भूल जगत तो, बह्म यहीं है। हरि हरि जपो भूल क्षण भंगुर, अंखियां नीर गिराये झर झर। बहता जा मन इन लहरों में, तुझे मिलेगा साजन का घर।

सुखदाता वह दुखहर्ता वह, क्यों ना उससे प्रीति बढ़ावे? तृष्णा के जंगल में फंस फंस, काहे अपना जिया दुखावे। स्वप्निल सारी यह दुनिया है, बहा जा रहा हाथ न आवे। हरि के गा ले गीत यहाँ पर, दुख के वह ही पार उठावे।

हरि हरि जपो धयान हरि का कर, पार करे किस्ती खेवट बन। डोर उसी के हाथों पगले, कठपुतली तू बन पुकार मन। सर्जक पालक हर्ता वह ही, मैं को छोड़ नाचता वह ही। पड़ जा मन हरि के चरणों में, जहाँ ले चले मंजिल वह ही।66

तुम बिन मेरा हरि दिल तड़े, कैसे पाऊँ नयना बरसे। अगम अगोचर पार न तेरा, प्राण तुझी को फिर भी तरसे। पी पी प्रियतम तुझे पुकारूँ, विरह बढ़े नित तुमको पाऊँ। छोड़ गया क्यों इस मेले में, तुम बिन भटकूँ राह न पाऊँ।

इस दुनिया का तू रखबाला, मुझे पिला दे अपनी हाला। प्यार तुम्हारा बढ़ता जाये, नयन बसो तुम मेरे लाला। हरि हरि जपें भूल जग के गम, प्यार तुम्हारा कभी न हो कम। बहे नीर तेरी यादों में, बहता जाऊँ नहीं रहें हम।

हरि हरि शरण तुम्हारी आये, नैया तू ही पार लगाये। अज्ञानी बालक पर तेरे, इन नयनों में आंसू आये। खड़ा द्वार पर लाज राखना, नयना बरसे रिमझिम मेरे। कुछ ना जानूँ ले चल मुझको, दिये भुलावा कोई प्यारे।

67

कितने बीते दिवस न आये, मन को कैसे बता मनाये? अंखियां नीर गिराये हरपल, तुम बिन सांसे यह क्यों आये। सारे जग के तुम मालिक हो, जियरा भटके ठौर न पावे। पग पग पर खा ठोकर गिरते, सुन लो मेरी तुमको पावे।

गाऊँ गीत नयन यह बहते, तोड़ न देना मुझसे रिश्ते। जनम जनम का दास तुम्हारा, पीड़ा हर लो पैयां पड़ते। अन्तर्यामी जग के पालक, नाथ तुम्हारे हम है बालक। कृपा दृष्टि तुम अपनी रखना, जियरा मेरा करता धाक धाक।

जगत पिता पालक तुम कर्ता, कष्ट हरो मेरे दुख हर्ता। शरण तुम्हारी हार गया मैं, पूछे अंखियां रो रो रस्ता। अपने मन्दिर मुझे बिठा लो, करूँ अश्रु से तेरी पूजा। बहता रहूँ इसी धारा में, विनय यही नयनों में बस जा।68

हरि बोलो हरि हरि ही बोलो, मन की आंखों को तुम खोलो। तुमको प्यारे पीव मिलेंगे, दिल में बसा कष्ट सब हर लो। डोर हाथ उसके तू नाचे, चलती कितनी क्यों ना सोचे? स्वप्निल है यह दुनिया सारी, करो भजन ना अंखियां मीचे।

हरि हरि जपो पार हो किस्ती, देखो हरि बिन अंखियां रोती। सारे जग का वह रखबाला, प्यार बढ़ा मन कर ले भक्ति। काली रैना तुझे सताये, पास तेरे कोई न आये। पड़ जा मन हरि के चरणों में, नैया वह ही पार लगाये।

हरि हरि जपो प्रेम रस पी लो, प्यासे मन की प्यास बुझा लो। हरि बिन चहुँ दिश मनुआ भटके, हरि मदिरा में उसे डुबो लो। कटते बन्धान मिटता क्रन्दन, हरि को जप मन वह सुख नन्दन। ले जाती हरि धारा तुमको, बहता जा ना भूल उसे मन।

69

जय पराजय है यहाँ पर, खेल यह दुनिया के सारे। याद कर ले मन हरी को, जाये ले धारा किनारे। कौन अपना है पराया, खेल ले दो दिन का खेला। प्रीति हरि से मन लगा ले, मन नहीं होवेगा मैला।

शान्ति की है खोज सबको, ढूंढ जंगल में तू हारा। डूब जा मन तू स्वयं में, बह रही अन्तस में धाारा। टूट जाये दिल तुम्हारा, दीखे ना कोई किनारा। छोड़ हरि हाथों स्वयं को, मानो मन वह ही सहारा।

बहते ले अपनी दुनिया, मिल विछुड़ते सुपना दुनिया। प्रेम हरि से तू बढ़ा ले, मिल तुझे जायेगी छैंया। जप हरी मन जप हरी तू, खेल हरि का चल रहा है। जय पराजय मान उसकी, कर्ता बनकर रो रहा है।70

दया दृष्टि हरि हम पर रखना, बालक तेरे आंसू बहता। सुख का दाता बु) प्रदाता, तुझे भूल मन जग में रोता। अनजानी गलियां पथ दूभर, अँखियां मेरी झरती झर झर। प्यार हमें हरि अपना देना, शीश झुकाये खड़े तेरे दर।

मिलती तुझसे ही हरि उर्जा, सदा करे हम तेरी पूजा। ;षि मुनि हरपल धयान लगाते, तुम सा और न कोई दूजा। हरि हरि भजो बसाओ दिल में, तड़े प्राण हरी को टेरे। नहीं भूलना इस मेले में, अँखियां हरि की बाट निहारे।

अबल नाथ हम देना तुम बल, सांस सांस में जपे तुझे हम। तेरे इंगित पर सब नाचें, अंखियां मेरी बरसे रिमझिम। जहाँ ले चले जाने सागर, मर्जी उसकी हम तो लहरें। धयान रहे हरपल सागर का, नाचे सागर रि ना लहरे।

71

पार लगा दे मेरी नैया, गया हार मैं सुन ले सैंया। कितने बरसे नयन हमारे, प्यास बुझी ना रोवे जीया। गिर गिर उठूँ चाह है तेरी, दीखो ना मैं जाऊँ कहाँ को? बिन तेरे यह रोवे जिवड़ा, देखो अब ढलती संधया को।

पाप पुण्य कर्मों की रेखा, पार न होती कैसा लेखा? दिखला दे पथ निष्ठुर मुझको, अज्ञानी मैं कुछ ना सीखा। बालक तेरे ज्ञान तुही है, बिना कृपा ना ज्ञान कहीं है। आंसू से मैं करता पूजा, देख मुझे तू जगत मही है।

हरि हरि भजे तुझी को गायें, स्वप्निल जग आनन्द मनाये। बहती है नयनों से धाारा, चाह प्यार तेरा हम पायें। लाज राखना इस मेले में, दास तुम्हारे दे दो छाया। चरण पडू. मैं नाथ तुम्हारे, देख हमें लो रोती काया।72

सुख दुख की पटरी पर जीवन, कौन चलाता इसका इन्जन। अंखियां नीर बहाती रहती, बरसे ऐसे जैसे सावन। शान्ति खोज में भटके जियरा, सुख दुख आधिा व्याधिा ने घेरा। तृष्णा हरपल नाच नचाये, कैसे टूटे इनका घेरा।

स्वप्निल दुनिया मन हरि भज ले, तज सब सोंच हरी में बह ले। पार लगावे वह ही नैया, कर विश्वास उसी में जी ले। तेरे बस न आये यहाँ कुछ, सोंच सोंच क्यों होता पागल। आना जाना मर्जी उसकी, मानो तेरा वह ही साहिल।

हरि भज ज्ञान तुझे वह देगा, पथ के कांटे वह हर लेगा। सकल सृष्टि का मालिक है वह, ताप हरे वह ही सुख देगा। हरि हरि भजो मगन हो गाओ, बन कर लहर यहाँ बह जाओ। लिये जा रही हरि की धाारा, जपो उसे आनन्द मनाओ।

73

चाहत रहे कुछ भी नहीं, तेरी रजा जी सकूँ। बल दे दे मुझको इतना, न हो शिकायत बह सकूँ। उठ गिरी दिल में तमन्ना, क्या हस्र उनका हुआ। वही हुआ चाहा तूने, नहीं सेवक मैं हुआ।

दास तेरा कुछ न मेरा, ले चलो मर्जी कहीं। आंख से यह नीर गिरते, वन्दगी करता मही। प्यार देता तू सदा है, जान ना पाया मही। मफ कर देना खता यह, अज्ञान में मैं मही।

जपे हम तुमको सदा ही, चले यह सांसे मही। आता पीछे से रेला, रि न जाने हो कही। तेरी दुनिया तू मालिक, रूठ ना जाना कही। बह रहे है नीर मेरे, प्यार को देना मही।74

अंखियां नीर बहा खोजे क्या, चुप हो चुप हो हरि में सो जा। लिये दर्द को यह दिल रिता, शरण हरी की पागल हो जा। बिन हरि चैन मिले ना पल भर, अंखियां बरसें रिमझिम रिमझिम। प्रीति तोड़ कर ऐसा बैठा, कैसे माने मुझमें ना दम।

नीर बहाती अंखियां मेरी, यादे लागे उसकी प्यारी। नहीं और कुछ अच्छा लागे, बसो नयन में तुम पर बारी। कहाँ जायें न पता हमें कुछ, ले जाती है तेरी धाारा। मेरे प्राण पुकारे तुमको, चाहूँ भूलूँ सब संसारा।

हरि हरि भजें झरे यह अंखियां, तरसे तुमको दिल यह सैंया। जग के सारे वैभव ीके, सदा तुझे मैं चाहूँ सैया। ले चल कोई भुलावा देकर, इस नैया को पार लगा दे। अज्ञानी मैं कुछ ना जानूँ, पड़ू. पांव मैं राह दिखा दे।

75

देख हम आये कहाँ से, जायेंगे कहाँ ना पता। झिलमिलाता जगत सारा, वह दे रहा किसका पता। नाचें कठपुतली बनकर, चले हैं किसके इशारे? जाने क्या कोई भी है, ;षि मुनि सब कोई हारे।

वासनाओं में उलझ ना, ज्ञान का दीपक जला मन। भूल ना संसार स्वप्निल, चैन आये सोंच तू मन। हरि जप जिय हरि का प्यासा, जग में रहता वह प्यासा। जप हरी भागे निराशा, टूटे दिल की वह आशा।

कौन अपना है पराया, खेल सारा धूप छाँया। कूल सारे छूटते हैं, न पकड़ में कोई आया। बन कर लहर बहते रहो, सुमरण सदा करते रहो। लहर तो बस लहर ही है, सागर हरी जपते रहो।76

जप हरि मनुआ प्रीति बढ़ाले, बरसे नयना उसको गा ले। उस बिन शान्ति मिले ना जग में, चाहें कितनी दौड़ लगा ले। पी पी रटे वही मन भावे, काहे जग में दिल उलझावे। सांचा प्रियतम वह ही है मन, अन्तिम क्षण तक साथ निभावे।

तुझे डरावे रैना काली, पास न तेरे कोई आवे। पड़ा विवशता की चक्की में, झर झर अंखिया नीर गिरावे। मत मन भूल हरी को जप ले, अंधियारे में साथ निभावे। दो पल के इस जीवन में जो, हरि को भजे वहीं सुख पावे।

नयन बसे हरि रि क्या शिकवा, हरि को हुआ समर्पित जो भी। जन्म मृत्यु में सब में वह ही, हरि ना छोड़ो जाये तन भी। तन उसका सब सोंच उसी की, बिन हरि कृपा चले न मन की। हरि हरि जप मन डुबो हरि में, तुझे बुलावे बन्शी हरि की।

77

हरि को भज ले, हरि को गा ले, सोये हरि के गीत उठा ले। खेवट बन वह पार करेगा, मन विश्वास हरी पर कर ले। ;षि मुनि सारे हरि हरि गायें, धयान उसी का सदा लगायें। मिट जाते सब दन्श यहाँ के, नयना जिसके हरी समाये।

खड़ा किनारे देखे क्या मन, बहती गंगा पावन है जल। पी अमृत को झूम उठेगा, नयना बरसे ज्यों सावन जल। जग से लिपटा क्या कुछ पाया, हरि बिन चैन बता क्या आया। जग में जब जब ठोकर खाया, हरि क्या याद तुझे ना आया।

आदि अन्त वह सदा सत्य है, हरि को भज ले हरि को जप ले। उस बिन प्राण रहेगे प्यासे, सत्य जान तू हरि को जी ले। हरि हरि जप रि मैं यह छूटे, खोजे अंखियां हरि कित रूठे? उस बिन चैन न आवे पल भर, जग वैभव सब लागे झूठे।

हरि भज हरि भज शान्ति मिलेगी, तपती धारती छाँव मिलेगी। और न सांचा सुख इस जग में, दुख से ना हि आंख बहेगी। हरि हरि जपो मगन हो गाओ, जप जप हरि को प्रीति बढ़ाओ।स्वप्निल है यह सारी दुनिया, हरि को गाते लय हो जाओ।78

हरि हरि जप लो अँखियां खोलो, ठगनी माया में ना खेलो। यहाँ छिपा आटे में कांटा, पागल मन हरि को ना भूलो। आया साथ न जाये कोई, हरि हरि जपों नहीं अब रूक। जप ले हरि को मिटते सब दुख, ज्ञान धयान सबका मालिक झुक।

दो दिन का यह रैन बसेरा, जी हरि मर्जी छटे अंधोरा। उसकी मर्जी आना जाना, बनो लहर सागर यह तेरा। बहे नयन जल उसे चढ़ा दे, हरि को जपो याद मन कर ले। तेरे हाथ न कुछ कठपुतली, डोर उसी के हाथ जान ले।

मैं को पकड़ जीव भरमाया, सुख दुख यह जीवन में आया। हरि मर्जी में रहना होगा, तप कर ले काहे शर्माया। चलता जा हरि संग तेरे है, उसको भूला नीर गिरें है। कर विश्वास उसे जो देखे, पीड़ मिटे सब हरी करें है।

79

हरि जप हरि जप हरि मिलेगे, जीवन है अनमोल रे। नयन बसा ले मूरति उसकी, सोंच छोड़ हरि बोल रे। हरि बिना अकुलावे जिवड़ा, करो भजन हरि बोल रे। जगत स्वामी अन्तर्यामी, तू पुकार हरि बोल रे।

नदिया बहे बह ले उसमें, पाप कटें हरि बोल रे। शान्ति मिलेगी वही सहारा, मन हरि को मत छोड़ रे। जपे जा चलता जा जग में, हरि दुर्लभ ना भूल रे। जप ले उसे मिटे भरम सब, बसा हृदय हरि बोल रे।

जीवन का वही है खेवट, पार करेगा नाव रे। बगिया उसकी ूल उसके, हरि रखबाला जान रे। सर्जक वही पालक सबका, मन भय से मत डोल रे। गिरे नीर जपे जब हरि को, सुख वह है अनमोल रे।80

हरि जो चाहे वह ही होता, सोंच सोंच क्यों पागल होता। लहर बना सागर में बहता, सन्त सदा हरि मर्जी जीता। हरि हरि सुमरो इस मेले में, खो जायें कब पता न चलता। कुछ पल के मेहमां यहाँ पर, धान्य याद हरि की ले जीता।

हरि का ही बस एक सहारा, नहीं और कोई भी द्वारा। पी ली जिसने हरि की मदिरा, मिट जाते सब दुख के द्वारा। विरह बढ़ावे प्रेम हरी का, अँखियां जल से पौधाा सींचे। ूल खिलें महके हि बगिया, जपो हरी क्यों आंखे मीचे?

छट जाते सब दुख के बादल, जी ले हरि को गा ले नगमे। हरि बिन चैन मिले ना मन को, गिरते आंसू रोवे नगमें। करो अर्चना बनो हरी के, मिटते दुख मिल जाती छाया। हरि सम्मुख सब वैभव ीके, जो भी हरि की शरणा आया।

81

हरि भज हरि भज कर ले तू तप, बहें नीर वह तेरा है रब। तपती काया पाती छाया, दीप जले अंधियारे में तब। खड़े राह में राह देखते, करें इंतजा आयेगा कब? कितने बीते जनम हमारे, प्यास मिटी ना आयेगा कब?

हरि भज प्यारा नाम यही है, कष्ट मिटावे सत्य यही है। इसको भज बह ले धाारा में, जाये जहाँ वह ही मंजिल है। हरि हरि भजो मिटाओ मैं को, सागर नाचे मिटा लहर को। लहर बनी जब तक तू नाचे, दीखे ना सागर तज मैं को।

हरि हरि बोलो आंखें खोलो, पकड़ हरी का दामन जी लो। यहाँ दर्द का दरिया बहता, अपना हरि को सुख से जी लो। आदि अन्त वह सदा सत्य हरि, लहर बने सागर ही सच हरि। अन्तस सागर धयान लगा ले, नहीं यहाँ तू सच सागर हरि।

82

हरि जप हरि जप और नहीं कुछ, पायेगा हरि छूटेगा दुख। स्वप्निल दुंनिया रंग अनेको, भरमायेगा पायेगा दुख। प्रीति बढ़ा हरि सोंच मिटेगी, अँधियारे में राह दिखेगी। सुख दुख का जो पहिया चलता, पागल उससे मुक्ति मिलेगी।

हरि हरि जप मन तू जप ले, मान कहा जग तृष्णा तज दे। हरि की लीला हरि ही जाने, स्वयं समर्पित उसको कर दे। हरि जप हरि जप मिटती चिन्ता, कण कण में है वह ही रमता। आंसू झरते उसे पुकारे, सारे जग का वही नियन्ता।

हरि जप हरि जप मिलेगी मुक्ति, सुख दुख में हंस अखियाँ रोती। अपना कौन पराया जग में, जला हरी की मन तू ज्योति। चिन्ता मिटती हरि जो जपता, सेवक बनता वह जो कहता। जाने यहाँ लीला उसी की, बहे नीर हरि को पर लखता।

83

दर्द कितना आंसुओं से, बहता रहा ना कम हुआ। तुम कहाँ पर छिप गये हो, तू क्यों नहीं मेरा हुआ। क्या तड़ते हम रहेंगे, तुम नहीं हमको मिलोगे। क्या जगत की रीति ऐसी, दन्श यह लगते रहेगे।

निज चरण में दो जगह प्रभु, अश्रु से पूजा करूँ मैं। और कुछ ना पास मेरे, देखता तुझ ओर हूँ मैं। कर्म क्या बन्धान यहाँ क्या, खेल कुछ ना जान पाया। अज्ञान में हूँ भटकता, लाज रखना शरण आया।

कौन पीड़ा को सुनेगा, जो ऊनती रात दिन है। प्यार पाने को तरसता, प्यार का सागर तुही है। जप हरि तुझमें ही लय हों, न हमें भटकाओं प्यारे। प्रीति तुमसे ही बढ़े नित, अबल हूँ तुमको पुकारे।

84

हरि बिन चैन न आये मन में, ओम जपो मन ओम जपो मन। स्वप्निल दुनिया सच क्या जग में, छोड़ो ना हरि ओम जपो मन। ढलते आंसू किसे पुकारे, किसके चलता जगत सहारे। कितनी योनी यहाँ घूमती, हरि पुकार ले सब ही हारे।

आना जाना मर्जी उसकी, क्यों भूला हरि ओम जपो मन। पाप पुण्य सुख दुख की छाया, बस तेरे क्या ओम जपो मन। ओम ओम जपते जपते मन, मिल जायेगी उसकी छाया। प्राण तड़ते है जो तेरे, रोती है जेा तेरी काया।

दास उसी का बन पागल मन, हरि बिन पकड़े किसका दामन। पल में साथ छोड़ सब जाते, हरि में बह ले प्राणों का धान। आदि सत्य वह अन्त सत्य है, वर्तमान का बह ही राजा। यहाँ शिकायत किससे करनी, मन हरि के चरणों में पड़ जा।

हरि हरि सुमरो जीवन जी लो, दो दिल का यह रैन बसेरा। कहाँ लहर ले जाये हमको, न जाने कहाँ होय सुबेरा। हरि बिन पार न हो यह नदिया, कहाँ छिपा ना जाने छलिया। नयना उसकी करें प्रतीक्षा, आती भर भर है यह अंखियाँ।

मुँह न ेरो दास तुम्हारे, अज्ञानी कुछ ज्ञान नहीं है। चरण तुम्हारे पड़ते है हम, ज्ञान हमें दे सबल तुही है। तू ही तो है मेरा खेवट, जीवन दाता जीवन पालक। पार लगा दो मेरी नौका, अंखियाँ थकी राह को तक तक।85

जो नियति हरि ने लिखी है, जान मन सच हो वही। नयन से जो नीर गिरते, तू चढ़ा वह जग मही। आज तू है कल कहाँ है, हाथ तेरे क्या यहाँ? वासनाएँ घूमते ले, कौन किसका है यहाँ?

खेल कुछ पल का यहाँ पर, मन निभा दे तू यहाँ। आती सांसे यह जब तक, जप हरी उसका जहाँ। कमलवत रहना जगत में, चैन आये जप हरी। दन्श कितने ही लगे पर, कवच है जानो हरी।

प्रीति मन हरि से बढ़ा ले, टूटेगा यह सुपना। धयान जब होगा हरी में, मिटते भय हरि जपना। धौर्य को दे हरि जपो मन, हरि सुरति हो ना डरे। जपो हरि अन्तस छिपा जो, पार वह नौका करे।

86

हरि जप हरि जप बरसे नयना, नहीं शिकायत जग से करना। हरि के रूप अनेकों नाचे, आंखे झरें झुक हरि को जपना। दास हरी के याद करो मन, मांगो बस उसकी ही छाया। हरि मर्जी से जग में बहता, चाहो सदा उसी का साया।

नयन बरसते उसे पुकारें, प्यार हरी का हरदम चाहें। अंधियारे में दीप जलाये, नहीं भूल दुस्तर यह राहे। हरि जप हरि जप चैन मिलेगा, भय मन का सब दूर हटेगा। चोंच दई चुग्गा वह देगा, कष्ट यहाँ के वही हरेगा।

नयना रोते किसे दिखाये, प्यार करो हरि के घर जाये। कूल छूटते जाते सारे, संधया देखो ढलती जाये। हरि हरि जप मन कवच बनेगा, नैया तेरी पार करेगा। कितने ही तूां फिर आये, हरि पर छोड़ो लिये चलेगा।87

ले चलो हरि पास मुझको, चाहता ना दूर होना। दास हूँ मैं तो हरी का, बहते हैं मेरे नयना। नयन से आंसू बरसते, हरि तुझे ही याद करते। क्या हुई गलती हमारी, छोड़ हमें काहे छिपते?

नयन रोवें जप हरी मन, ना जगत से दिल लगाना। हरि कृपा बिन ना कभी भी, सफर होता है सुहाना। जप हरी मन जप हरी को, कवच बन रक्षा करेगा। छूट जाते साथ सारे, अन्त तक वह ही चलेगा।

ना यहाँ रूकता कभी कुछ, बह रहा निज मौज ले कर। बह हरी का नाम लेकर, धाारा हरी की क्या फिकर। हरि जपो हरि ही जपो मन, चरण उसके पकड़ ले मन। पार नैया को करेगा, साथ तेरे ना अबल बन।

88

हरि हरि कहते बहे नयन जल, वहीं ले चलो जहाँ तू अटल। गिर जाये सब झूठी आशा, बढ़ता जाये सदा भक्ति जल। मेरी आशा टूट न जाये, मांग रहा तुमसे ही मैं बल। अपना लो इस अज्ञानी को, नयनों से मेरे गिरता जल।

हरि सुन लो ना जिया जलाओ, खोजा रस पर मिला न जग में। अँधियारे में किरण तुही है, तुम बिन कहो कहूँ किससे मैं। अगम अगोचर पार न तेरा, करो कृपा तो छटें अंधोरा। सारे जग के मालिक हो तुम, बसो हृदय में होय सुबेरा।

मृगतृष्णा में ॅंसे नहीं हम, मदिरा तेरी सदा पिये हम। जग की तज झूठी आशा को, पहुँचे तेरे चरणों तक हम। कैसे यहाँ लगाये मन हम, जग में बिखरे है इतने गम। कृपा बनाये रखना हरि तुम, दर तेरे तक पहुँचे हरि हम।89

किसने कहूँ मैं, रोते है नयना। हरि को पुकारूँ, हरि से ही कहना। ;षि मुनि जपें है, दुनिया के मालिक। तुम लाज रखना, अज्ञानी बालक।

बोलो कहाँ तुम, छिपते कन्हैया। खा रहा ठोकर, रोती है अँखियां। कण कण बसे हो, काहे ना दीखो? मिटती चुभन ना, लगे जख्म देखो।

जग में थका मैं, चल चल के हारा। कर पार नौका, तुम्हारा सहारा। दिल में बसो तुम, न कब सांस जाये। तुमको मनाये, चरण नयन धोये।

90

पार करेगा वह ही नौका, हरि हरि बोलो हरि ही बोलो। हरि की दुनिया नाच रहे हम, बहते आंसू हरि को जी लो। बैचेनी जब डसती मन को, कर विश्वास उसी को जप लो। आये कहाँ से जाये कहाँ, मिले हुए पल हरि को जी लो।

सागर लहर उठे गिर जाती, सागर भूल लहर भरमाती। सागर सुमरे लहर यहाँ क्या, चैन मिले िर बहती जाती। हरि सागर ना और यहाँ कुछ, सुमर इसे मिट जाते सब दुख। पागल मनुआ पर न समझे, अन्तस धयान करे आवे सुख।

नयनों में जब आंसू आये, सोंच तेरी तुझे रूलाये। बाती कैसे जले ज्ञान की, हरि जप ले पथ वही दिखाये। काली रैना वही सहारा, लिये जा रहा तू क्यों हारा। करो समर्पित हरि हाथों में, मैं हटती पिव पावे प्यारा।91

मेरी नैया के खेवट, बरसती आंख यह रिमझिम। धाड़कता दिल न जानूं पथ, कहाँ पर छिप गये हो तुम। जग स्वामी तुम्ही सर्जक, तुम्हारे नाथ हम बालक। तड़ता प्यार को यह दिल, कृपा करो तेरा सेवक।

तुझे हम खोजते जायें, चले यह सांस प्रभु जब तक। बहाये नयन यह गंगा, न पाये हरि तुझे जब तक। नहीं जाने यहां कुछ भी, सहारा एक बस तेरा। जला दो ज्ञान का दीपक, प्रभु मिल जाये पथ तेरा।

चलूँ चल चल गिरूँ थक कर, संभालो थक गया हरिहर। प्रतीक्षा कर रही आंखें, गिराती अश्रु यह झर झर। नयन में तुम बसों मेरे, कभी होना जुदा ना तुम। कृपा अपनी सदा रखना, बजे नित प्यार की सरगम।

92

हरि बिन जियरा यह घबराये, इन नयनों में आंसू आये। अपना प्यार मुझे तुम देना, पथ तेरे पर चल कर आये। नयन बहाये गंगा हरदम, हरि हरि जपूँ तुझे ही पूजूँ। बहूँ इसी में कभी न भूलूँ, चाह यही बस तुमको खोजूँ।

अबल नाथ बल मुझको देना, मेरी यादों में तुम बसना। निरखूँ हरपल छवि तुम्हारी, मिट ना जाये जब तक सुपना। पाप पुण्य कर्मो की रेखा, पार करूँ कैसे जिय रोये? चरण पड़ू मैं नाथ तुम्हारे, पार करे तू ही तो होये।

आंसू बहते तुझे पुकारे, देखों हमें तेरे हवाले। इस जंगल में खो जाऊँगा, भूल नहीं मुझको मतबाले। हरि हरि गाऊँ तुझे मनाऊँ, चाहत सारी और मिटाऊँ। आदि सत्य तू अन्त सत्य है, ज्ञान हमें दे ना भरमाऊँ।

93

गलत सही कुछ जान न पाये, जो होता मर्जी तेरी। मनुआ पागल समझ न पाता, तुम करो कृपा कर ना देरी। शीश धारूँ ना ठुकराओ प्रभु, ज्ञानदीप प्रज्वलित कर दो। दो नयनों को प्रभु भीगे जो, तुम बढ़ा प्यार हर्षित कर दो।

अज्ञानी हम ढूंढ रहे पथ, ठोकर खा कर गिर जाते हैं। खोई खोई अंखियों को ले, नाथ संभल ना हम पाते हैं। कंठ है सूखा कैसे बोलूं, हाय विधाता तू क्यों रूठा। मेरे सर्जक मेरे खेवट, पार लगा दे मेरी नौका।

अंसुवन की बहती धाारा से, अपने पग को धाो लेने दे। फुल होय मेरा यह जीवन, मैं रोता कुछ कह लेने दे। तुमको पाऊँ सब विसरा कर, लीन होय तन मन यह सारा। सृष्टि नियन्ता देखो मुझको, थका हुआ टूटा मैं हारा।

94

थक गये हम चलते चलते, ना पता कहाँ जायेंगे? आंसू से पूरित नयन है, तुझ कृपा को चाहेंगे। बीतती जाती है बेला, तुम बिना न चैन आये। नयन में बस जाओ मोहन, जिय तुम बिन डगमगाये।

करो दया होवे सुबेरा, जग में प्रभु राज्य तेरा। कंठ तेरे ही गीत गायें, सुन विनय चल मैं हारा। तुमको भूला रो रहा हूँ, जग के पालक रचैया। दम निकल जाये न मेरा, उलझ जग में कन्हैया।

चाह नहीं मिटती यहाँ है, शाम ढलती जा रही है। सांस में रम जाओ मोहन, ज्ञान जीवन का तुही है। आंसू को स्वीकार कर लो, नहीं छिपो तुम नियन्ता। अज्ञान में रिते है हम, कृपा हो दीप जलता। 95

हरि हरि जपो न भूलो मनुआ, मेला यह सब दो दिन का। पार लगे ना उस बिन नौका, चल हारा हूँ मैं अटका। मिले कृपा पथ तब मिल जाये, अज्ञानी मैं जन्मों का। गाते गाते गुण तेरे प्रभु, तन छूटे रि ना खटका।

कैसे पाऊँ रोऊँ पल पल, बाट निहारूँ तू अब आ। बीत रही जीवन की संधया, हरि हिय बस जा अब तो आ। तन मन निर्मल हो सब पावन, दीप जले प्रभु जी तेरा। अनजाना पथ मुझे डराये, तुम बिन ना कोई मेरा।

जग के रखवाले तुम मोहन, जानूँ ना कुछ अज्ञानी। मुझको जीवन देने वाले, प्यास बुझा तू दे पानी। जग में डोले मन तू पागल, कांपे हरपल तू रोता। बीतेगी यह काली रैना, लागे ना डर जो जपता।

96

तुमको हरि मैं कैसे पाऊँ, चलन करत हरि चल ना पाऊँ। अन्तर्यामी भाग्य विधाता, करो कृपा तुझ चरणा पाऊँ। अंखियां बरसे छतियां धाड़के, जल में रह क्यों जल को तरसे? अपरम्पार तुम्हारी लीला, चाहूँ प्यार तुम्हारा बरसे।

मेरे खेवट मुझे संभालो, डगमग करती मेरी नैया। पार लगा दो भवसागर से, चरण पड़ा तेरे कन्हैया। जीवनदाता पालक मेरे, छिपे कहाँ ना मिटते तेरे। गूंज रहा स्वर जग में तेरा, कान हुए क्यों रि भी बहरे।

प्यार बढ़ा दो खोऊँ तुझमें, नैन बसो ना आंखें खोलूँ। मिटे सकल अभिलाषा मेरी, सांस सांस में तुमको जप लूँ। सागर में उठती लहरें हैं, दीख रहा न कोई किनारा। नहीं लहर का अपना कुछ भी, रि भी नीर बहाये खारा। 97

करूँ मैं अर्चना तेरी, बहे नयनों से है पानी। प्यासा हूँ पिला पानी, नहीं तुमसे बड़ा दानी। अज्ञानी मेरे मालिक, लगा दो पार यह नैया। तुही खेवट हमारा है, चाहें हम तेरी छैया।

नहीं कुछ दीखता है प्रभु, अंधोरा सब तरु छाया। खिलाता भाग्य खेला है, जाने ना तेरी माया। गीतों को तेरे गाऊँ, जला दो ज्ञान का दीपक। निहारे पथ नयन तेरा, करो भव पार तुम मालिक।

तुही रक्षक हमारा है, तुही निर्बल सहारा है। तुमको पाऊँ मैं कैसे, बहती अश्रु धाारा है। विरह की आग में जलकर, मिट जाऊँ मेरे स्वामी। बढ़ा दो आग यह मालिक, लगे प्यारी हमें स्वामी।

98

कौन है पागल कौन स्याना, हरि नाहीं जिसने पहचाना। पागल प्रीति लगाये जग से, छूट रहा सब यहाँ ऋसाना। धाूप छाँव का खेल यहाँ है, मत भूलो रब शान्ति वहाँ है। उस बिन चैन न आवे मन को, प्राणों की तो प्यास वही है।

जिसने जपा स्वयं को छोड़ा, बहता नाचे हरि उस घर में। कौन करे अब उसके दर्शन, सुधा बुधा भूला खोया उसमें। हरि ही नाचे वही नचाये, भेद नहीं कोई भी जाने। मैं को भेद प्रीति में डूबे, बहे नीर बस उसे बखाने।

जप लो उसे और क्या जग में, बन बन टूट रहे है सुपने। इस जीवन का स्वामी वह ही, कितने चाहो देखो सुपने। जप हरि शान्ति सुधाा बरसाये, इस मन का वह मैल मिटाये। थके प्राण को चैन मिले तब, हरि लीला में लय हो जाये।

99

डोल रहा यह पागल मनुआ, ना प्यारा प्रियतम खोज रहा। जग में चहुँ ओर भटकता यह, शान्ति मिले नहीं तड़ रहा। अनजाना पथ ना जाने कुछ, करता गुमान जाने वह कुछ। जग के जब जब हैं दन्श लगे, ना समझे पागल है क्या कुछ।

काली रातें पर ना साकी, कहाँ जायें धाड़कती छाती। प्यार रंग हरि का चढ़ जाये, जल जाये जीवन की बाती। हरि हिय बसे कटे यह जीवन, तन मन सब हो जाये शीतल। प्यास मिटे उसके बिन नाहिं, कृपा होय हरि में बीते पल।

अंधाकार चहुँ ओर डराता, हरि प्रकाश डर दूर भगाता। मानो मनुआ याद उसे कर, खेल यहाँ सब मिटता जाता। जी ले हरि में हरि में ही खिल, पल दो पल का है यह जीवन। पी ले मदिरा उस प्यारे की, टूटें सब कर्मों के बन्धान।

100

आओ तुम कृपा करो प्रभु, ज्ञान का वरदान दे दो। डूब जाऊँ बस तुझी में, भान तुम मेरा मिटा दो। तेरी दुनिया है सुहानी, मैं सजा इसको सका ना। क्या करें शिकवा किसी से, दिल हमारा ही रहा ना।

वन्दना स्वीकार कर लो, अश्रु भी सूखे नयन के। तुम सहारा नाथ दे दो, दन्श मिट जायें जगत के। चल सकेंगे या गिरेंगे, अज्ञात है सब यहाँ कुछ। किस ललक को मैं लिये हूँ, बोलता ना व्योम भी कुछ।

आँख का इक नीर गिर कर, वह कथा अपनी सुनाता। मैं सुनाऊँ किसको पीड़ा, सब रूदन यह व्यर्थ जाता। पथ बना यह हाय कैसा, सब तरु मैं रूदन पाता। पोंछ पाता मैं न आंसू, मैं उसी में डूब जाता।

जी रहा हूँ चल रहा हूँ, भूल कर दिल की तपस को। मैं कहाँ ढूंढूं तुम्हें प्रभु, जानता हूँ मैं न मग को। 101

तक तक आँखें हार गई यह, तुम ना आये मेरे भगवन। ले सको हमारी सुधि ले लो, अस्तांचल में यह जाता तन।

शूलों से भरा हुआ यह मग, चाहत से भरा हुआ यह जग। कैसे मैं आवाज तुम्हें दूँ, मैं अँधियारे में भूला मग।

समझ हुई मेरी क्यों बौनी, जली विवशता में है होली। कितना ही रोये रोने को, निर्मम तू ना आँखें खोली।

साज संवार रहा टूटा सा, तेरे स्वागत की तैयारी। उठे गिरे स्वर पता नहीं यह, सम्बल तेरा तुझसे यारी।

झांक रहा तेरी आंखों में, क्यों विसरा दी करूणा अपनी। दीप बन सका ना मन्दिर का, किस्मत कैसी मेरी करनी।

102

मेरे चाहे क्या होये है, जो वह सोचे वह होये है। सोंच पता ना हमको उसकी, जीया हरदम बस रोये है। ठोकर खाते हरदम हम है, समझ नहीं इंगित हम पाते। ऐसी है बेबसी हमारी, कठपुतली बन हम रह जाते।

जग में हम घूम रहे ऐसे, न मिले किनारा कोई हमें। जनम जनम से भटक रहे हैं, थाम रहा नहीं कोई हमें। प्रीति करूँ कैसे मैं निष्ठुर, विधाा मुझे तू बतला तो दे। आंसू का तू झरना दे दे, डूब मुझे उसमें जाने दे।

पथ तेरा कैसा ईश्वर है, विछुड़ यहाँ मिल कर जाते। सुपने बुनते बुनते जग में, सुपने से जग में खो जाते। चाहत से भरा हुआ प्याला, इसमें किसने विष को डाला। सुन्दर सी हरियाली धारती, दुख पीड़ा को क्यों रच डाला। चल पाऊँ पथ तुम्ही दिखा दो, अन्तहीन मैं गिरता जाऊँ। किसका थामूँ हाथ बता दो, नहीं किनारा कोई पाऊँ। कैसे धीरज दूँ इस मन को, तन से हारा मन से हारा। जल जल कर भी जल न पाया, नियति नहीं क्या कोई किनारा।

ढूंढा तुझको ढूंढं न पाया, अँधियारे में मैं भरमाया। इन सूनी आंखों से प्रभु जी, दर्श नहीं तेरा कर पाया।

103

कोई सोवे कोई जागे, पागल मनुआ काहे रोवे? प्रीति रीति की राह अनोखी, शीश दिये कुछ भी ना जावे।

आंखों से आंसू ढरकाये, काहे अपनी व्यथा सुनाये? ऊन रही यह सारी दुनिया, क्यों ना मधु का जाम पिलाये?

पिव की याद करे मन रोवे, मन को कैसे मैं समझाऊँ? मुख से वह कुछ भी ना बोले, सिसक सिसक कर मैं रह जाऊँ।

इसी शून्य में घूम रहा सब, बनना मिटना खेल यहाँ है। याद करो बस उस प्यारे को, आंसू का उपहार यहाँ है।

104

जब सूख गया निज का ही रस, क्या दोष दूसरों का बोलो। कुदरत ने विछा दिये काँटे, सुख मिले कहाँ से तब बोलो।

ना दोष तुझे हम देते है, अपनी किस्मत को रोते है। सौगन्धा प्यार की ली हमने, अर्पण अपने को करते हैं।

मुझे भुलावा देकर हरपल, खूब रूलाता है निष्ठुर। जी लेंगे जैसा तू चाहे, टूट चुके हम तो अब निष्ठुर।

मेरी सभी दुआयें ले ले, जो कुछ भी है वह सब तेरा। जन्म जन्म का प्यासा मैं हूँ, इसी प्यास ने मुझको घेरा।

बहते आंसू का करो आचमन, निज अंहकार को तृप्त करो। आंख मूंद मेरी पीड़ा का, अपनी चाहत को पूर्ण करो।

105

जीवन में एक सहारा ले, इस अनजानी पगडण्डी पर। समझाता मैं मन को प्रतिपल, आंसू बहते मेरे झर झर।

छिपे कहाँ तुम कैसे खोजूँ, जीवन भटकन का दे डाला। भूख प्यास से पीड़ित यह तन, मन को चाहत से रंग डाला।

चल गिर कर हम ठोकर खाते, चहुँ ओर घूरते है प्रतिपल। काली अंधियारी रातों में, खोज रहे हम तेरा सम्बल।

प्रतिपल हमें नचाता तू है, कर आंख मिचौनी छिप छिपकर। बने विवश हम नाच रहे है, क्या रस तेरा इसमें निष्ठुर?

ले चल चाहें जैसे मर्जी, चरणों में गिर रोने देना। स्वीकार करो मेरे आंसू, इनको ना तुम रूकने देना।

106

तेरी कृपा बिना ईश्वर, जगत में चल न पायेंगे। ढलकते अश्रु मेरे जो, तुझे कैसे चढ़ायेंगे? दीखे नहीं डगर है लम्बी, कह दो कैसे पायेंगे? अश्रु चढ़ेंगे ना ही तुमको, रि कहो कहां चढ़ायेंगे?

तुझे हम खोजते ही रिते, प्रभु अब तुम मिलो हमसे। यह जिन्दगी हो चुकी बोझिल, जिय मिलने को है तरसे। यहाँ मिटते है हर क्षण हम, न तुम बिन अब रहा जाता। यह आंसू गिरते धारती पर, हमें लख लो पिता माता।

नमन हम करते तुझे निशदिन, बितायें याद में हरपल। डरते है रूठ नहीं जाओ, बुझता है मेरा यह दिल। उठते हैं गीत विरह के यह, हरि तुमको ही देखे हैं। तुम बांसुरी की धुन सुना दो, आस यही बस करते है।

बही जा रही यहाँ जिन्दगी, सागर में लय होवेगी। जायेंगे दर्द लिये क्या हम, करूणा यह कहलायेगी। रहे रजा में तेरी राजी, तुझे रहें रटते हरदम। ीका पड़े न दर्द हमारा, निकल जाये हमारा दम। 107

बीते यह पल हरदम तुममें, तुझे ढूंढते हम खो जाये। न होंगे हम, होगा ना गम, दूर शिकायत सब हो जाये। ढूंढ़े तुझे खेल है प्यारा, करूँ जतन मैं जग से हारा। याद तुझे कर नीर बहायें, चाहें यह तन डूबे सारा।

मिलना मत नहिं प्यास बुझाना, कितना चाहे जिया जलाना। मिटे याद में हरदम तेरी, भूलूं न इसमें ही सुलाना। तू है शमा पतंगा बनूं मैं, मुझे समा ले मुझे मिटा दे। गोद तुम्हारी आ जलूँ मैं, तुझमें मिटूँ भुला सब कुछ दे।

देखें नैना आती रैना, सुन ले ईश्वर मेरे बयना। ज्ञानी नहीं रिझाऊँ कैसे, आता मुझको केवल रोना।

108

शरण प्रभु तेरी हम आये, पथ को आलोकित कर देना। अज्ञानी बन घूम रहे हम, ज्ञान दीप को प्रभु दर्शाना। दीख रहा न कोई किनारा, चहुँ ओर दीखता पानी है। नैया को पार लगा देना, कांपती यह जिन्दगानी है।

नयनों में आंसू मेरे हैं, पास नहीं कुछ दे पाये। करें आरती बस हम तेरी, चाहें यह बगिया लहराये। तुमको भजें और याद करें, मन्जिल को सरल बनाते हो। तुम ज्ञानपुंज शक्तिमान हो, सारे जग के संचालक हो।

गिर गिर तुझे पुकार रहे हैं, कठिन डगर है पथ में कांटे। पीड़ा हरो मेरे बांके अब, नाम तुम्हारा दुख है काटे। चाहत के मेले सजे हुए, इसमें हरपल हम ठगे गये। बन्शी की धुन सुनने तेरी, इस जीवन में हम तरस गये।

फूल खिलें ना कभी कृपा बिन, द्वार खड़े खाली झोली ले। जगह हमें दे दो चरणों में, बुझता दिया फिर खूब जले। कितना दर्द छिपा इस जग में, तुम बिना शान्ति नहीं है मिलती। जीवन की अन्तिम घड़ियों तक, तुझे भजें तो किस्ती तिरती। 109

कितना दर्द छिपा है जग में, फिर भी जीवन यह चलता। इस पीड़ा को हृदय छिपाये, नीर आंख का सब कहता। अंखियाँ कह कह भई बाबरी, कथा खतम नहीं हो पाई। जीवन की अन्तिम घड़ियों तक, हरि बिन शान्ति नहीं पाई।

बीत रहे जीवन के यह पल, इनको तू मत विसराना। हरि को भज लेना इस जग में, उसके ही घर फिर जाना। दर्द तुम्हारे मिट जायेंगे, उस हरि को बस तू जपना। दिल में हो विश्वास उसी का, फिर काहे जग से डरना।

सुमर उसे जीवन में हरपल, यादें उसकी भर लेना। दीप ज्ञान का जल जायेगा, तम को दूर भगा देना।

110

आंसू गिरते झर झर मेरे, लखे न कोई किसको टेरे। मतलब की यह सारी दुनिया, हरि भज ले मन मिटते घेरे। चलते चलते हम थक जाते, अन्तस बैठा लख ना पाते। मृगनाभि वसी कस्तूरी पर, ढूंढे जग में ठोकर खाते।

नयनों में मूरति श्याम बसे, बस पाप जगत के यहीं कटे। कर्मों के बन्धान टूट चलें, हरपल जो भी हरिनाम रटे। यह नयन निहारें बस हरि को, तब मिट जायें सब जग के गम। अज्ञान हरो मेरे भगवन, अन्तस में दीप जलाओं तुम।

पथ तेरे हम चलते जायें, सांसे तुमको जपती जायें। तेरा ले विरह गिरें आंसू, कुछ और नहीं हमको भाये। टूट गये हम रोते हैं बस, अनजान डगर पर चलते है। तुम हमें संभालो हे भगवन, हम अन्धाकार में जीते है।

गिरते आंसू मेरे टप टप, तेरी करूणा चाहें हरपल। ना कर अनाथ मुझको सर्जक, मैं हार गया ना कोई बल। 111

वियवान में तुम कहाँ छिप गये हो, मेरे ईश हम पुकारे तुझी को। भूलो ना हमको डूबे गमें हैं, जियरा ना लगता खोजें तुझी को।

तुम्हारे बिन जग वीरान मेरा, टूटे ऐसे ना दीखे सबेरा। झर झर गिरते हैं यह नीर देखो, पाये न पथ हम दीखे अंधोरा।

न भटका हमें चले तेरे पथ में, लगता नहीं दिल तड़ हिय उठती। मिटते यहाँ पर पुकारें तुम्ही को, आशा पल पल में नित जाल बुनती।

सुरतिया तेरी हमको है भाये, मिल जाये मुझको तेरा सहारा। कठपुतली हम नचा जैसा चाहे, लहर ना रहे जलधा फिर तो सारा।

कहाँ से आये कहाँ जा रहे हैं, संभलता नहीं गमें बोझ दिल का। पुकारे तुमको जीवन के कर्ता, गगन भी चुप ना पता है किसी का।

112

राम मिला दो राम मिला दो, पांव पड़ू. मैं राम मिला दो। भूल गया पथ कहाँ गया रब, खोई मेरी प्रीति जगा दो। तुम बिन बीता जाये जीवन, बरसे नयनों से है सावन। विरह तुम्हारा मुझे सतावे, ना हो निष्ठुर ऐसे मोहन।

जनम जनम से घूम रहा हूँ, प्यार तुम्हारा तरस रहा हूँ। आंख उठा कर देखो मुझको, जीवन से मैं हार गया हूँ। सारे जग के तुम हो पालक, प्रभु हम तो हैं तेरे बालक। खोई डगर हमें दिखला दो, मेरे जीवन के तुम सर्जक।

कण कण में तुम छिपे हुए हो, फिर भी पता न पाता तेरा। सारे जीवन में खुशियां हो, कैसे पाऊँ होय सुबेरा। नीर बहे तू क्यों ना आये, रोता जीवन किसे दिखाये। माना कुछ भी पास नहीं है, बता यहाँ हम कित को जाये?

करो कृपा कट जायें बन्धान, सुन लो प्रभु तुम मेरा क्रन्दन। सदा रहें तेरे गुण गाते, पार करो तुम मुझको मोहन। छवि बस जाये मोहन तेरी, पलक उठा न जग को देखूँ। बीती सदियां भूल गये क्यों, दिल में तुमको हरपल निरखूं। सब वैभव ीके पड़ जाते, पायें तुमको दुख भंजक हो। खड़े द्वार पर हमें बुला लो, रूठो ना मेरे करूणाकर। झोली खाली अंसुवन भीगी, बीत न जाये शाम कही फिर।

113

टप टप गिरते आंसू खोजें, आया हूँ मैं शरण तुम्हारी। तुम बिन मोहि चैन ना पड़ता, लाज रखो मेरी गिरधारी। मेरा हुआ है जिया भारी, जल जल राख हो रही सारी। याद तेरी में राधा खोई, मीरा ने भी सुधी विसारी।

बालक हम तो हैं अज्ञानी, दे दे भीख हमें तू दानी। खिले तुम्हारी बगिया प्रभु जी, नयन गिरावे झर झर पानी। पथ को देखें तुझे पुकारें, डूब रहे हम पार उतारो। मेरे प्राण पियारे रसिया, करो दया तुम हमें निहारो।

चले यहाँ हम गिर गिर जावें, तुम बिन कुछ भी रास न आवे। ऐसी प्यास जगा दे मोहन, बन चकोर न आंख हटावें। पाप पुण्य भोगेंगे सारे, खुद से जुदा न करना प्यारे। पार लगा नौका दीवाने, रो रो कर बस तुझे पुकारे।

जीवन की अन्तिम घड़ियों तक, मेरे हृदय बसे तुम रहना। मतिमन्द हम जाने नहीं कुछ, सद्कर्मो में हमें चलाना। ज्ञानी धयानी सबको देखे, मुझे देख ले चैना आवे। तुम हो सारे जग के स्वामी, कहत बने न हमें रूलावे।

तेरी माया से मैं बेसुधा, तुमको हरपल करूँ समर्पित। माफ मुझे प्रभु तुम कर देना, होऊँ ना पीड़ा से विचलित।

114

तेरी चौखठ पर पड़े हैं, हमको ठुकरा न देना। अंखियों से जो नीर बहते, इनको स्वीकार करना। धयान तुही है ज्ञान तू प्रभु, जिन्दगी का लक्ष्य हो तुम। तुझमें है हमको समाना, भटके अरमान हो तुम। नयनों के मोती चढ़ाये, चाह न तू रूठ जाये। जगत में ना इनकी गिनती, न किसी के काम आये। झोली खाली हम भिखारी, दर तेरे पर खड़े हैं। दया को माँगे तुम्हारी, प्रभु हम रीते घड़े है।

बाजती बन्शी तुम्हारी, चल रही दुनिया सारी। देखते तुझ ओर प्रभु हम, भूल न हमको मुरारी। जाते पल बैचेन यह दिल, कैसे हो पार नैया। मुझ पर करो कृपा मुरारी, तुम हो मेरे खिवैया।

115

सुन लो प्रभु जी विनती मेरी, आई हूँ मैं शरण तुम्हारी। अंखियां रोवे तू नहि आवे, नाथ जगत से मैं हूँ हारी। अगम अगोचर पार न तेरा, मन भटके माया ने घेरा। पार लगा दो मेरी नौका, तम हर लो मैं पाऊँ डेरा।

नयन बहें खोजूँ मैं तुमको, इससे बढ़कर सुख ना कोई। प्रीति बढ़ा ले निर्मोही तू, पांव पडू. अब दुख ना देई। सकल सृष्टि के तुम हो कर्ता, बालक तेरा मैं क्यों रोता? तेरी लीला तू ही जाने, माफ करो तुम मेरे भर्ता।

;षि मुनि ज्ञानी पूजा करते, तुझे मनाते कभी न थकते। सम्बल देना हार गया मैं, देख हमें लो पैंया पड़ते। झर झर नयन बहाये पानी, मुँह न ेरना तुम हो दानी। पुष्प अर्चना के है सूखे, िर भी माँगू तुम से पानी।

116

हरि हरि जपें मुझे बल देना, गिरा रहे आँसू यह नयना। तुझे रिझाऊँ कैसे मोहन, अपना प्यार मुझे तुम देना। हरि तुमसे मिल पाऊँ कैसे, घूम रहा अनजाना जंगल। कौन चाह ले कर मैं आया, करो नाथ अब मेरा मंगल। दीन दयालू अन्तर्यामी, तुझे पुकारूँ सबका स्वामी। रोम रोम में तुम बस जाओ, बीती बहुत भरो अब हामी। पाने को हरि प्यार तुम्हारा, कितने जन्मों से भटक रहा। पर न पता तुम्हारा पाया, जख्मी दिल ले कर घूम रहा।

बहते आंसू की गंगा में, पीड़ा दिल की मैं कहूँ किसे? बह सके नहीं क्यों यहाँ रूकें, ना सुने बता िर कहूँ जिसे? तुम ही हो पोषक जग के, सकल विश्व के तुम हो प्यारे। करूँ अर्चना निशदिन तेरी, पूर्ण मनोरथ करो हमारे।

117

वासनाओं में भरा हरि, नियति क्या देखो हमारी? डूबती जाती यह नौका, पार कर दो चक्रधाारी। एक तुम ही हो सहारे, पर हुए ओझल मुझी से। तुझे पाऊँ नाथ कैसे, पूछता प्रभु मैं तुझी से।

धयान तेरा ही बढ़े प्रभु, याद में अपनी रूलाना। बीत जायेगा रु र यह, तुम नहीं मुझको भुलाना। पूजा करता तुम्हारी, नयन जल यह चरण धाोये। पाप क्या है पुण्य क्या है, कुछ ना जानूं दिल रोये।

देख लो आंखें उठाकर, अबल हम हैं तू कृपा कर। गीत मेरे रो रहे हैं, चलकर पहुँचूँ तेरे दर। प्रभु तुझे जपते रहे हम, तुमसे नाहि सुरति छूटे। ले चलो मुझको कहीं भी, पर न तेरा साथ छूटे।

नयन में तुम बसो मेरे, सांस तेरे गीत गायें। जग यह सारा ही सुपना, पर सुपन से तू न जाये। तुम रहो पर हम नहीं हो, लौ लगे ऐसी हमारी। विनय को स्वीकार कर लो, खेल सब तेरा मुरारी।